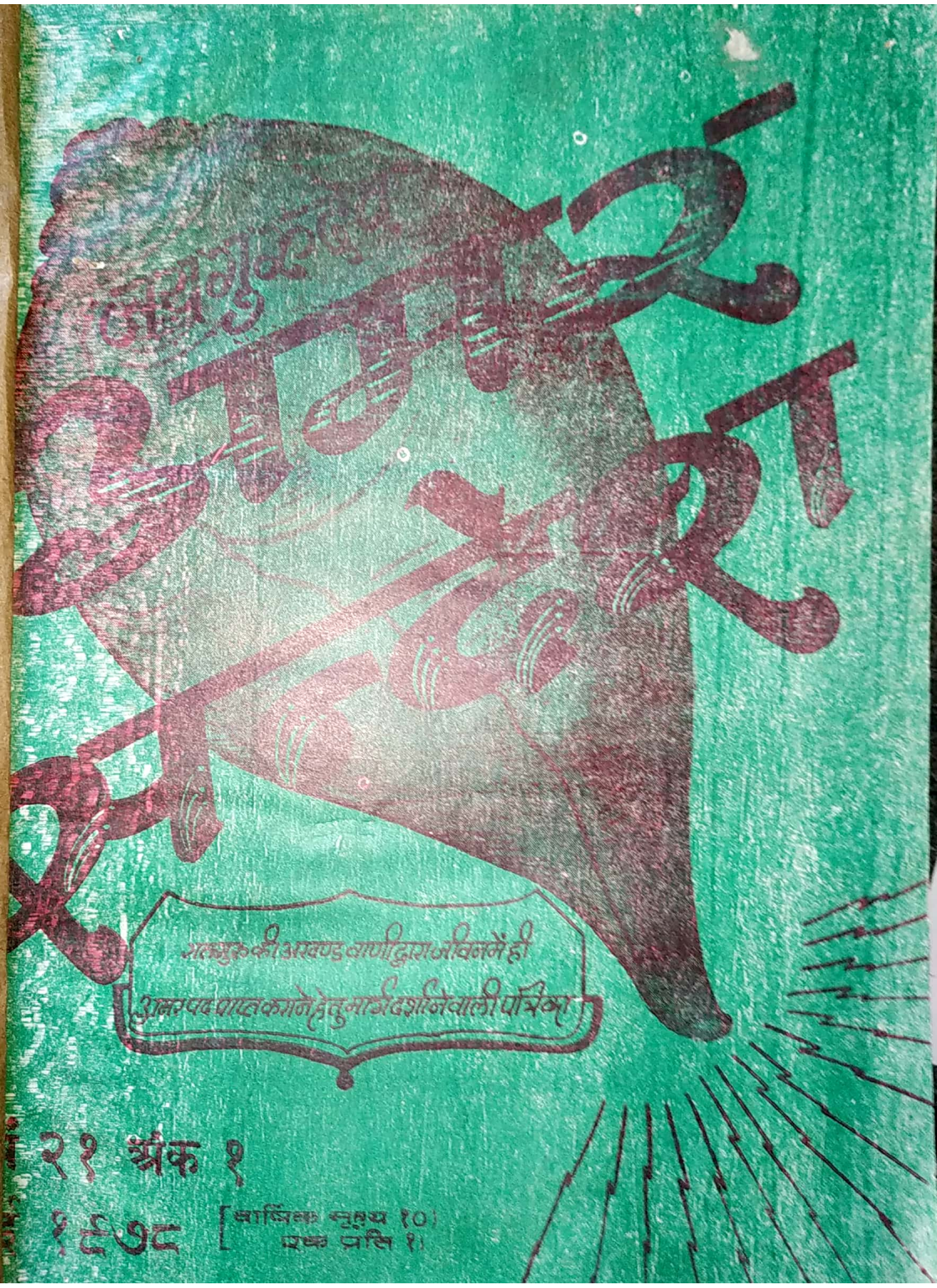

२१ अंक १

१९७८ [वार्षिक मूल्य १०)
एक प्रति १)

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	१
मई	सन् १९७८
बैशाख	सं० २०३५

—❀—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

—❀—

प्रकाशक

चिरौली सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं०

—❀—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—❀—

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा कहे

(२) गम खाओ अर्थात् बर्दास्त करो। कोई कुछ भी। उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक १] मई १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

आरत गावे सेवक तेरा

आरत गावे सेवक तेरा। संशय भरम ने चित को घेरा ॥ १॥
अब स्वामी किरपा करो ऐसी। संशय जड़ सब जायँ बिनासी ॥२॥
निरसंशय चित शब्द समाई। दसवें द्वार रहे ठहराई ॥३॥
आगे महासुन्न मैदाना। मौज होय तो करे पयाना ॥४॥
आगे भँवरगुफा की खिड़की। सोहँग धुन जहाँ निस दिन खड़की ॥५॥
तहाँ जाय कर आनँद पाऊँ। आगे को फिर सुरत चढ़ाऊँ ॥६॥
सत्तनाम सत शब्द ठिकाना। चौथा पद सोइ संत बखाना ॥७॥
हंसन शोभा कही न जाई। षोड़स चन्द्र सूर छबि छाई ॥८॥
अद्भुत रूप पुरुष कहा बरनूँ। कोटि सूर चन्दा इक रोमूँ ॥९॥
दीपन शोभा अजब सँवारी। हंस हंस प्रति दीप निरारो ॥१०॥
अमी कुंड जहाँ भर रहे भारी। पुरुष दरस का करें अहारी ॥११॥
नित नित लीला नई जहां की। महिमा कहं लग बरनूँ वहाँ की ॥१२॥
अलख लोक तिस आगे थापा। गई सुरत तहाँ तजकर आपा ॥१३॥
अलख पुरुष शोभा कहा गाई। अरब कोटि शशि सूर लजाई ॥१४॥
सुरत रूप वहाँ ऐसा पाई। कोटि भान छबि ऐसो गाई ॥१५॥
सुरत चली आगे पग धारा। अगम लोक को जाय निहारा ॥१६॥
अगम पुरुष की शोभा न्यारी। कोटिन खरब सूर उजियारी ॥१७॥
आगे ता के पुरुष अनामी। ता को अकह अपार बखानी ॥१८॥
संत बिना वहाँ और न जाई। संतन निज घर वह ठहराई ॥१॥
हे स्वामी यह बिनती हमारी। भेद दिया तुम अति से भारी ॥२०॥
पहुंचूं कैसे सो भी गाओ। मन मेरे को बहुत उमगाओ ॥२१॥
सुरत शब्द की राह बताई। दया बिना नहिं पहुँचे भाई ॥२२॥
संशय भरम न राखो कोई। धीरे धीरे सुरत समोई ॥२३॥
शब्द खोज तुम निस दिन राखो। बार बार स्वामी यह भाखो ॥२४॥
अब आरत पूरन कह गाई। संत मता सब दिया बताई ॥२५॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक १
मई सन् १९७८

बचन महराज साहब--

भक्त जन की दया

गुरु चरन धूर हम हुइयां।
तुम सुनो हमारी गुइयां॥
क्या क्या सुख कहूँ गुसइयां।
बिना भाग नहीं कोई पइया॥

भक्त जन कहता है कि मैं मालिक के चरनों की धूल हूँ। हे सहेलियों। तुम मेरी बात सुनो। उसके चरन रस का जो सुख और आनन्द है, उसका किस तरह वर्णन करूं? बिना भाग के कोई उस चरन रस को नहीं पा सकता है। जब तक आपा है, तब तक चरनों की धूल नहीं हो सकता। जहां आपा है, वहां यह मुजस्सिम और मुंजमिद है। जब आपा टूटेगा, तब मन चूर होगा, और तब ही चरन धूर होगा और जब चरन धूर हो जावेगा, तब हर हालत में चाहे उलटी हो चाहे सुलटी, मालिक की मौज अनुसार बरतेगा और उसमें राजी रहेगा और जब अन्तर का रस आवेगा, तब निहायत ही मगन हो जायगा और मालिक का शुकराना अदा करेगा और तन धन जो कुछ यहां के पदार्थ हैं सब चरनों पर कुरबान और न्यौछावर कर देगा और फिर इस तरफ के भोगों पर निगाह भी नहीं करेगा। दुनिया में भी जो कोई मदद करता है, तो लोग उसके शुकर-गुजार होते हैं और वह शख्स उनको प्यारा लगता है, इसी तरह अन्तर में जब सहारा मिलता है और परमानन्द प्राप्त होता है, तब मालिक का शुकराना अदा करता है। और उलटी सुलटी हालत जो कुछ आयद हो, उसमें रंज नहीं करता, बल्कि उसमें अपना नफा समझता है और यकीन करता है कि मेरा प्रीतम जो कुछ करेगा, उसमें फायदा ही होगा, बल्कि दुख और तकलीफ जब होती है, तब और ज्यादा प्रीत मालिक के चरनों में उसकी पक्की होती है।

दुनिया में भी जहां जिसकी सच्ची मोहब्बत है, वहां दुख और तकलीफ जो कुछ पेश आती है, उसको खुशी से झेलते हैं, कभी दुखी नहीं होते। बल्कि प्रीतम से जो कुछ तकलीफ मिलती है उसको वह गनीमत समझते हैं और जिस कदर उससे मिलने के लिये तकलीफ उठाते हैं, उतनी ही ज्यादा प्रीतम उनसे प्रीत करता है। ऐसे ही यहां भी जिस किसी की मालिक से मुहब्बत है, उस पर उलटी सुलटी हालत जो कुछ गुजरती है, उसमें वह मगन होता है। कभी घबराता नहीं है। अगर घबराया तो प्रीत में कसर है। और जिसको सच्ची प्रीत है, उसके हिरदय में दिन रात मालिक का प्रेम छाया रहता है। दुनिया का काम काज करते वक्त भी थोड़ा बहुत प्रेम बना रहता है और जिस वक्त कि काम से फारिग होके चरनों में चित्त जोड़ता है, फौरन प्रेम रंग में रङ्गीन और सरशार हो जाता है। जैसे लड़के के हिरदय में हर वक्त अपनी मइया की मुहब्बत छाई रहती है, जिस वक्त खेल कूद करता है उस वक्त थोड़ा बहुत भूल भी जाती है, मगर उसके हिरदय में मुहब्बत की डोरी लगी हुई है जिस वक्त मइया की याद आयी, फौरन उसकी तरफ दौड़ता है और जाकर गोद में लिपट

जाता है और चिपट जाता है। ऐसी प्रीत मालिक से तब आवेगी, जब चरन धूर होगा, और धूर तब होगा, जब मन चूर होगा और मन चूर तब होगा, जब आपा दूर होगा और जब आपा दूर होगा, तब यह सूर होगा, तब तूर सुनेगा, नूर झलकेगा, मूर से मिलेगा और पूरे पद को जाके प्राप्त होगा।

चरन सहसदल कँवल में हैं। जब यह वहाँ पहुंचे, तब चरन धूर होवे। जैसे पानी को आग देते हैं, तब भाप और गैस रूप होकर ऊपर चढ़ता है, ऐसे ही मन का जहां थाना है वहां इसको भी जब विरह की आग लगेगी, तब सूथम होकर ऊपर की तरफ चढ़ेगा और जाकर सहसदल कँवल में चरन धूर होगा। सतसंग करके मनको जब तोड़ेगा, तब काबिल बनेगा।

सतसंग करना मन तोड़ सरन संतन की।
अन्तर अभिलाषा लगी रहे चरनन की॥

जो कि चरन धूर हुआ है, उसने जिस वक्त कि ध्यान की कमान खैंची यानी गुरु स्वरूप का ध्यान किया और अन्तर में स्वरूप प्रकट हुआ, फौरन उसकी सुरत जैसे तीर छूटता है, वैसे ही अन्तर में चढ़ती है और जैसे बाहर जब तीर छोड़ते हैं तो निशाना बांधते है, वैसे ही सहसदल कँवल का शब्द है, वह इसका निशाना है। त्रिकुटी में गुरुरूप का दर्शन होता है। सत्तलोक में सत्त शब्द से मेल होता है और फिर राधास्वामी धाम में जाकर समाता है। त्रिकुटी सत्तलोक और राधास्वामी धाम, यह उसके ठेके हैं और इन तीनों स्थानों में आरती होती है। त्रिकुटी में गुरु की, सत्तलोक में सतगुरु की और राधास्वामी धाम में राधास्वामी दयाल की।

मन की ऐसी हालत है कि इन्द्रियों का रस, जो कि एक किनका और जरा है और निहायत ही अच्छा है; उसके पीछे दौड़ता फिरता है और अन्तर का जो निर्मल रस है, उसको नहीं लेना चाहता। फिर क्या किया जावे? असल में यह उसके सतसंग की कसर है। जिसका मन कि थोड़ा चूर हुआ हैं, उसने जिस वक्त कि गुरु का ध्यान सम्हाला, फौरन थोड़ा बहुत उसका गुरु से मेला हो गया और हर वक्त वह अपने सिर पर गुरू का हाथ देखता है।

मेरे मस्तक हाथ गुरु का, मैं हुआ गुलाम गुरुका
गुरु धरा सीस पर हाथ, मन क्यो सोच करे

और जिसका मन अभी चूर नहीं हुआ है, उसका यह हाल है कि उसको कभी प्रीत प्रतीत आती है और कभी डिगमिग हो जाती है। अगर ज्यादा दुख और तकलीफ हुई तो बिल्कुल अभाव ले आता है। इस तरह की हालत इस पर अक्सर गुजरती रहती है।

कोइ तो ऐसे हैं कि घंटे अभ्यास करते हैं, पर उस में ऊंघते और गुनावन करते रहते हैं। लोग समझते हैं कि बड़े अभ्यासी हैं मगर हैं असल में कोल्हू के बैलठे घर ही में हैं, और समझते हैं कि हम पचास कोस चले हैं।

आसन मारे क्या हुआ, मरी न मन की आस
तेली केरा बैल ज्यो, घर ही कोस पचास॥

इस तरह न प्रेम आता है और न अन्तर में चाल चलती है। उलटा अहङ्कारी होता है। और जो दो घंटे अभ्यास दुरुस्ती से बने तो प्रेम में रंग जावे। इससे तो यह बेहतर है कि पांच ही मिनट भजन में बैठता है पर जिस वक्त तवज्जह चरनों में जोड़ी, फौरन मन निश्चल हो गया और रस आने लगा। राधास्वामी दयाल ने गुरु भक्ति पर ज्यादा जोर दिया है। इससे सहज में काम बनता है और प्रेम बढ़ता है और जो गुरु भक्ति की महिमा नहीं जानते और कोल्हू के बैल के मुआफिक दो दो घंटे अभ्यास करते हैं, असल में उनको सतसंग की कसर है।

पिरथम सीढ़ी भक्ति गुरू की।
दूसर सीढ़ी सुरत नाम की॥
जब लग गुरु भक्ति नहिं पूरी।
मन मनसा यह होय न चूरी॥

Scanned with CamScanner

वर्ष २१ अंक १
मई सन १९७८

मन चूरे बिन सुरत न निर्मल ।
कैसे चढ़े और लगे शब्द चल ॥
गुरु भक्ति अस कैसे आवे ।
सतसंग कर गुरु सेवा धाये ॥

जहां सच्ची प्रीत है, वहां तकलीफ को भी खुशी से बरदाश्त करते हैं और सबकी प्रीत को उस पर न्यौछावर कर देते हैं। मसलन कोई स्त्री का गुलाम होता है तो जैसे वह कहती है, वैसे करता है। अगर रात के बारह बजे हुक्म करे तो जब तक वह काम नहीं हो लेता तब तक उसको चैन नहीं आता और मां बाप भाइयों की प्रीत जो कि कुदरती खून के रिश्ते की है, उसको वह न्यौछावर कर देता है। अगर उनके खिलाफ स्त्री ने कुछ कहा, फौरन उनसे लड़ाई झगड़ा करने को तैयार हो गया। अकसर कुटुम्बियों में इस तरह के मुआमले होते रहते हैं। सबब उसका स्त्री की मुहब्बत है। ऐसे ही जिसकी कि मालिक से मुहब्बत है, वह हर तरह की तकलीफ खुशी से झेलता है और उलटी सुलटी हालत में राजी रहता है, बल्कि उसको अपने प्रीतम की दात समझता है और यह कहता है-

तू स्वामी मैं सेवक तेरा ।
भावे सिर दे सूली मेरा ॥
भावै गिरवर गगन गिराय ।
भावै दरिया माहिं बहाय ॥
भावै चहुं दिस अगिन लगाय ।
भावै काल दसों दिस खाय ॥
भावै कनक कसौटी दे ।
दादू सेवक कस कस ले ॥

अब देखिये हर तरह की तकलीफ झेलने को तैयार है। भक्त के लिए इससे बढ़कर और क्या है ? मगर मालिक नहीं चाहता है कि भक्त जन को ऐसी तकलीफ होवे। वह सिर्फ यह चाहता है कि संसारी चाह न उठावे, मामूली तौर पर अपना गुजारा करे, उलटी सुलटी हालत जो कुछ होवे; उसमें मौज पर राजी रहे, भजन और भक्ति करता रहे। इस तरह अहिस्ता अहिस्ता काम बन जायगा। पर जब तक मन चूर नहीं होगा। चरन धूर नहीं होगा। इसमें इसका चारा नहीं है। यह निज दात है। जिसका भाग है, उसको यह दात मिलती है सो इसका भाग भी सहज सहज गुरु बख्शेंगे।

भाग बिना क्या करे बिचारी।
यह भी भाग गुरू से पा री ॥
राधास्वामी कही जुक्ति यह सारी।
उनके चरन से प्रेम लगा री ॥

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)

१५-२-७९ से २५-२-७९ तक काशी में गंगा के किनारे रेती पर

एक अच्छा एक बुरा

(सतसंग स्वामी जी महराज, आजमगढ़, २४-४-७८ सायं ७-३० बजे)

नर नारियों, बच्चे और बच्चियों हिन्दू मुसलमानों और ईसाइयों, आप ने जो तकलीफ और कष्ट किया है दूर से चल कर मैं आपके लिए बड़ा आभारी हूं। ऐसा समझता हूँ कि भगवान की कृपा, खुदा की मेहरबानी आप सब पर होने वाली है। ऐसा आभास महसूस होता रहता है।

परमात्मा की अनमोल दया

भगवान ने, खुदा ने, आपको इन्सान बनाया। आपको मनुष्य बनाया। उसने बहुत बड़ी दौलत आपको सम्पत्ति दी। सबसे बड़ी चीज इस मनुष्य शरीर जिस्म में उसने आपको बुद्धि दिया अक्ल दी और खुदा ने भगवान ने कहा कि ऐ इन्सान, ऐ आदमी तू जमीन पर जाकर बहुत बड़ा, बहुत महान, बहुत ऊंचा यह जमीन मृत्यु लोक स्थान जो आप को इस समय मिला हुआ है जिस पर आप रहते हैं मनुष्य शरीर सबसे महान सबसे अनमोल परमात्मा और भगवान की ईश्वर की खुदा की मेहरबानी और दया आप पर हो चुकी।

सबको अधिकार मिला

उसने सभी अधिकार सभी हक हिन्दू मुसलमान ईसाइयों को दे दिये। भगवान ने कोई भी अपने हाथ में नहीं रक्खा। दो चीजों का अधिकार उसने सबको दिया है मानव जाति को। इन्सानों को। एक अच्छा एक बुरा। सारा खेल दुनियां में अच्छे ही और बुरे का है। इसीलिए मुहम्मद आये इसीलिए ईसा मसीह इसीलिए महावीर आये। इसीलिए बौद्ध आये। राम और कृष्ण आये। शंकर जी आये। विष्णु ब्रह्मा और शिवजी आये। कबीर आये। बड़े बड़े फकीर आये औलिया आये पैगम्बर आये। सिद्ध आये और महात्मा साधू सन्त आये।

अधिकार अच्छे और बुरे का

दो चीजों को बताने के लिए जमीन पर नाओ और दो चीजो को आजादी इन्सानो को आदमियों को बताओ। एक बुरा और एक अच्छा। उनको यह बताओ कि खुदा ने भगवान ने दो चीजों का (Law) कानून बना दिया है। एक तो अच्छे का अच्छे का एक बुरे का वह अपनी अपनी मजहब की किताबो में जो कुछ भी लिखा हुआ है अच्छा, बुरा उसको रामयण गीता भागवत कुरान बाईबिल से देखो।

अच्छा और बुरा करने में स्वतन्त्र

भगवान ने जब दो कर्मो के लिए आपको आजादी दी कि आंख से अच्छा देखो बुरा, कान से अच्छा सुनो बुरा, वाणी से अच्छा सुनो बुरा; बुद्धि से अच्छा विचार करो बुरा। उसने अपने हाथ में कुछ नहीं रखा। इस पृथ्वी पर आपको पूर्ण स्वतन्त्र कर दिया। जो आपकी इच्छा हो कर डालो। उसने अपने यहाँ बड़े बड़े दफ्तर खोल

Scanned with CamScanner

रखे हैं। उसके कर्मचारी दफ्तरो में बैठकर काम करते हैं। बड़े बड़े बही खाते, रजिस्टर खुले हुए हैं। उसके कर्मचारी चौबीसो घन्टे, न वे सोते हैं और न आंख बन्द करते और न कभी कान बन्द करते है। चौबीसों घंटे हर वक्त हर क्षण कलम लेकर कागज लेकर बैठे रहतेहैं।

हर क्षण का काम नोट होता है

न मालुम तुम कब जागकर क्या कर लो किसको मार दो, किसको गाली दो, किसको धोखा दो कैसे किसके साथ झूठ बोलो। कोई व्यभिचार करो, कोई दुराचार करो। कोई कत्ल करो, कोई अन्याय करो कोई पूजा करो कोई पाठ करो, । कोई इबादत करो। गंगा स्नान करो, यमुना स्नान करो, किसी देवता को पूजा करो। अच्छे और बुरे कर्मो के करने के लिए कर्मचारी कलम चलाते रहते हैं। इसलिए आपकी आयु, जितना आप का समय जितनी आपकी हैं स्वासें हैं तब तक उसको कुछ नहीं बोलना है।

कर्म करने के बाद फल भोगने में परतन्त्र है

कर्म करने में हर इन्सान आदमी, पूरा स्वतन्त्र और आजाद है। और उसके बाद फल भोगने में परतन्त्र हो जायेगा। इसके लिए बड़े बड़े फकीरों महात्माओं को इस दुनिया में आकर अच्छाई बुराई को बताने के लिए कष्ट उठाना पड़ा तकलीफ उठानी पड़ी। मुहम्मद का इतिहास दर ब दर अच्छाई बुराई को बताने के लिए ठोकरें खानी और कष्ट उठाना पड़ा। पानी नहीं मिला उनको खाना नहीं मिला। तुलसी दास जी के साथ क्या हुआ, कबीर रैदास के साथ या हुआ मीरा के साथ क्या हुआ। रामको चौदह वर्ष वन में रहना पड़ा उनके साथ में हुआ, कृष्ण भगवान के साथहुआ बौद्ध के साथ हुआ। ईसा मसीह के साथ क्या हुआ। अच्छाई बुराई की आपकी सब बात बताने के लिए और स्वाधीनता आपको। होश में लाने के लिए महात्माओं ने बड़े बड़े कष्ट, तकलीफें उठाई। इसलिए कि आप इसे समझ जांय। होश में आ जांय।

पता नहीं आगे क्या होगा

आप को तो कुछ मालुम नहीं है कि आगे क्या होगा। यह मैं जानता हूँ कि आप दस वर्ष रह सकते हो बीस वर्ष रह समते हो। पचास वर्ष रह सकते हो। साठ वर्ष रह सकते हो। अस्सी वर्ष रह सकते हो सौ वर्ष रह सकते हो। लेकिन आप को मालुम नहीं कि वास्तव में क्या होगा। यह आप बाबा जी की बात को बड़े ध्यान से सुनें।

मनुष्य शरीर सोने चांदी से नहीं मिलता

मनुष्य शरीर एक ऐसी न्यामत चीज है जो बादशाह के खजाने से सोने चादी से नहीं मिलती। यह तो जब उसकी मेहरबानी होती है अच्छे पुण्य बहुत दिनों से जब आप के जमा होते हैं। उन अच्छे कार्यों से तभी जाकर मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है। और अनेको जन्मो के अच्छे कार्यो से कभी फकीर और महात्मा आप को मिलते है। लेकिन आप तो समझते हो कि मुझको ऐसे ही मिल जायेगा यह मनुष्य शरार। तो बड़े ध्यान से सुने।

दुनियां का घर का काम करो

बाबा जी यह चाहते हैं। दिन में काम करो चाहे खेती का हो, चाहे दुकान का हो, चाहे दफ्तर का हो, स्कूल का हो। बच्चे जांय स्कूल। वहां खूब पढ़ें। वहां से आये घर में पढ़े हो सके तो माता पिता की सेवा करना। नहीं तो पूरा समय दिन और रात सोने के बाद पढ़ने में लगाना। चले जाओ खेत में वहां खेती का

Scanned with CamScanner

काम करो और उसके बाद जब घर आये तो बच्चों की सेवा की। उसके बाद दुकान करो वहां से आये तो बच्चों की सेवा की। दफ्तर में गये काम किया घर में आये बच्चों की सेवा की ये दो काम मुख्य है।

अनाज, सब्जी, फल, कपड़े, सोना, चांदी, हीरा जवाहरात उससेम कान खूब जो भी वस्तुये बनाओ, अपनी सुरक्षा के लिए शरीर रक्षा के लिए। उनको खूब इकट्ठा करो। और सौ बार तुम फल खाओ सौ बार अनाज खाओ। सौ बार दूध पीयो। और सौ बार सब्जी खाओ और हर क्षण पर आप कपड़े बदलो। बाबा जी को कोई एतराज नहीं। कोई इन्कार नहीं। सिर्फ यह चाहते हैं।

आत्मा को परमात्मा के पास पहुँचावें

भगवान ने आप सबको बुद्धि दी। खुदा ने आपको अक्ल दी उस अक्ल से सोचो और उससे विचार करो क्या विचार करो कि मनुष्य शरीर ये जिस्म खुदा ने थोड़े दिन के लिए किसी खास काम के लिए आपको दिया। परमात्मा ने मनुष्य शरीर किसी विशेष कार्य के लिए यह निधि, यह सम्पत्ति आपको दी है। जो बार बार नहीं लिलेगी। इसलिए दी है कि यह जीवात्मा भगवान से के यहाँ से जब से आयी उसके बाद से उससे अलग हो गयी उससे जुदा हुई। तबसे आप ने इस जीवात्मा को रूह को आपने भगवान के पास खुदा के पास अभी तक नहीं पहुंचा पाया।

स्वर्ग में देवता बहिस्त में फरिस्ता खुदा से मिन्नत भगवान से प्रार्थना करते है कि मृत्यु लोक में जमीन पर हमको एक दफे, एक बार जिस्म दे दो मनुष्य शरीर दे दो, और वहां हम इबादत करें। भजन करें फिर ऐसी साधना करें कि मरने के पहले इस मनुष्य शरीर से जीवात्मा से जगाकर भगवान के पास पहुंचा दें।

गुरु के सरल मार्ग से घर का पता मिलेगा

बच्चे बच्चियों देवताओं को फरिस्तो नर नारी बच्चों हिन्दू मुसलमान ईसाइयों यह मनुष्य जिस्म नहीं मिलता और आपको मिल गया। मैंने कुछ मना नहीं किया। मैं तो यह चाहता हूँ कि रास्ता आपको नहीं मिलता; कोई नहीं बताता। मैं आपको सुलभ सीधा और सरल आसान रास्ता मनुष्य रूपी मकान में जीवात्मा के जगाने का एक शुद्ध अंजन, साबुन जड़ी आपको दे दूं। आप दो दिन चार दिन छः दिन आठ दिन दस दिन १५ दिन २० दिन उस जड़ी और साबुन को लेकर दो चार पांच रगड़े मारो। जिस तरह से कपड़े में साबुन लगाकर पानी का फटका मार देते हो तो कपड़ा साफ हो जाता है वैसे इसी तरह से मन बुद्धि को चित्त को अन्तः करण को जीवात्मा को तरा सा वह अंजन। जड़ी साबुन लगाकर रगड़ दो। तो क्या हो जायेगा निर्मल क्या हो जायेगा साफ। क्या हो जायेगा पवित्र और फिर क्या होगा कि तुम्हारा मनुष्य रूपी मकान का कपाट खुल जायेगा। दरवाजा खुल जायेगा। फाटक खुल जायेगा। उससे क्या होगा वह जीवात्मा जाग जायेगी। क्या होगा जागने से दिव्य नेत्र ज्ञान चक्षु शिवनेत्र खुल जायेगा। जिसको मुहम्मद ने देखा कि दूज का चाँद चमकता है कोई वह चाँद वह चाँद नहीं है कि बत्ती जला दी और तेल डाल दिया।

राम नाम रूपी मणि है

राम नाम रूपी मणि बहुत बड़ी विशाल। सूरज से भी ज्यादा प्रकाश करने वाली चन्द्रमा से भी ज्यादा रोशनी करने वाली वह कुदरती स्वाभाविक मणि आनन्द की, ज्ञान की, शक्ति की, प्रेम की जल रही है।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक १
मई सन १९७८

कपाट खुलने पर आनन्द मिलता है

वह कपाट खुल जाय। दरवाजा कब खुले जब निर्मल, साफ हो जाओ। दिव्य नेत्र ज्ञान चक्षु उभर जाये खुल जाये तो मणि का साक्षात्कार, दर्शन हो जाये। इस जीवात्मा को वह आनन्द दो। वह ज्ञान दो वह प्रेम दो वह शक्ति दो। जिस रास्ते से वह आयी उसी रास्ते से वापस अपने वतन में अपने घर में अपने देश में अपने मालिक के पास अपने स्वामी के पास अपने प्रभु के पास पहुँच जाये इसलिए आपको जिस्म यह मनुष्य शरीर का अवसर, मौका आप को सब को दिया गया।

लेकिन आप तो मेरे तेरे में पड़े हैं

लेकिन आप सुबह से शाम तक खाने में देखने में सोने में काम में क्रोध में लोभ में अहंकार में मद में मत्सर में झूठ में कपट में फरेब में। मेरे में, तेरे में इसके में उसके में। इसमें सब उलझे पड़े हुए हो। लेकिन यह नहीं जानते हो कि यह कितना वे कीमती शरीर है उसका एक समय निश्चित और निर्धारित है।

यह शरीर किराये का मकान है

यह शरीर मनुष्य शरीर एक किराये का मकान है। समय पूरा होते ही मकान मालिक फौरन अपने सिपाहियों को फरिश्तों को भेज देगा। जाओ आप समय पूरा हो गया। हिन्दू का मुसलमान का इसाई का। यह ले जाओ वारेन्ट और उसको जाकर कहो। ऐसे वैसे नहीं। फरिश्ते बड़े बदशकल। वह जमदूत ऐसे कुरूप कि उधर से आकर बड़े जोर से खड़े होंगे और ऐसी भयंकर आवाज लगायेंगे कि वह जो आप समझते हो वह गोला छूटता है। बम छूटता उससे भी ज्यादा आवाज होती है। एकदम जोर से आकर कूदेंगे और आवाज जोर से लगायेंगे। एकदम से आप लड़खड़ा जायेंगे और कहेंगे यह लो वारेन्ट और अभी मकान को इसी समय एक मिनट में खाली कर दो।

जमदूत डरावने होते हैं

जैसे ही उनकी आवाज सुनी आंख से फौरन देखा तो टट्टी पेशाब एक साथ निकल जायेगी। इतने भयानक। इतने कुरूप। इतने बदशकल। इतने डरावने। और निकलो इस मकान से एक मिनट के अन्दर।

वहां आप के कर्मों का हिसाब है

उसी समय मनको, बुद्धि को, चित्त को प्राणों को जीवात्मा को निकालकर साथ और आप को उसके दफ्तर में खड़ा कर दिया जहां आप का सारा अच्छा बुरा हिसाब लिखा रखा है।

तुरन्त फैसला होता है

इधर तो कपड़ा, वह शरीर जमीन पर गिर पड़ा। इस पर कपड़ा डाल दिया तब तक तैयारी हो रही। उसके पहले ही पहुंचा दिया। पूरा हिसाब हो गया। वहां हिसाब करके हुकुम नामा सुना दिया कि सीधे इसे ले जाओ दोजख में, जलने वाले कुण्ड में, सड़ने वाले कुण्ड में। काटने वाले कुण्ड में। चार खानो में चौरासी लाख योनियों में। उन कारागारों में इसको बन्द कर दो।

आजादी बुरे के लिए नहीं मिली थी

मैंने इसको आजादी दी थी। स्वाधीनता दी थी कि अबकी बार तुम मनुष्य शरीर पाकर ऐसी इबादत साधना, उपासना करना भजन करना कि मरने के पहले जीवात्मा को ऊपर पहुचा देना।

लेकिन इसने कोई काम आजादी से स्वतन्त्रता से, अधिकार से नहीं किया। उसने वहां काफी पाप ही पाप बुरे बुरे काम किये। चलो इसको ले जाओ सिपाहियों जम दूतों फरिश्तों। जाओ इसको अभी से ले जाकर काटो पीटो।

Scanned with CamScanner

नर्कों में कष्ट उठाना होगा

वहां जाकर कितने कितने करोड़ वर्षों तक एक रफ्तार में जलाते रहेंगे। सड़ाते रहेंगे। गलाते रहेंगे। काटते रहेंगे। लाखो मील। चार चार लाख मील दूर तक आवाज उस जंगल में वियाबान जंगल में कोई भी तुम्हारा साथी सोहबती दोस्त मित्र सोना राज पाट, विद्या, भाषा और बच्चे, औलाद वहां नहीं जायेगे।

क्या मरकर जाने लगोगे तो साथ जायेगा

अब मैं आप से यह पूछना चाहता हूं कि जब आप इस दुनियां को छोड़कर जाने लगोगे। इस पर कपड़ा डालकर के जमीन में गाड़ दिये जाओगे और लकड़ियो पर रखकर फूंक दिये जाओगे तो मैं आप से यह जानना चाहता हूं। आप को भगवान ने खुदा ने, अक्ल और बुद्धि दी। कोई भी दुनियां का सामान जो कुछ भी आप ने मेहनत करके किसी भी रूप से, उसको घर में रखा है या खेती जमीन या जानवर सोना चांदी पति और पत्नी और कोई भी औलाद कोई आप के साथ जायेगी ?

बच्चू कुछ जायेगा साथ ?

अरे भाई नर नारियो जायेगा कुछ ?

जनता ने उत्तर दिया –नहीं।

तो फिर इतने बड़े बड़े अपराध किसके लिए करते हो।

कोई साथ नहीं जाता

मैं यही आप को बताना चाहता हूं। कितना झूठ कितना छल कितना कपट कितना धोखा। जानवर मार दो। आदमी मार दो। रात को डकैती करो। चोरी करो। चलते हुये किसी का छीन लो। और इस जमीन को जबरन ले लो। लट्ठ मार दो। यह सब किसके लिए।

मकान खाली किया कि यह गिरा

आप पहले यह सोचो। इस पर विचार करो। यह सब किसके लिए। लाखों कमाये। करोड़ों कमाये। करोड़ों रक्खे। लाखो मकान बनाये, दो मकान बनाये चार मकान बनाये। कितने दोस्त बनाये मित्र बनाये। कितने आप ने संगी साथी अपने मददगार के लिए खड़े किये। लेकिन जब यह किराये का मकान खाली कर दिया तो यह जमीन पर गिरा।

सारे साथी समसान भूमि तक। मरघट तक घर के दरवाजे तक पीछे। आगे चलो तो फिर पीछे। और वहां समसान भूमि तक गये। उसके बाद रवाना।

तो यह कुछ जाने वाला नही। तुमने तो शरीर के लिए आप ने साथी बनाये मैं समझता हूं, ठीक है शरीर के लिए आप ने सारे साथी बना लिए।

समय रहते कोई साथी बना लो

लेकिन जीवात्मा का, रूह का कोई साथी बनाया। कोई दोस्त बनाया कोई मित्र बनाया कि उसकी मदद करता, उसकी हिफाजत करता। उसको खतरे से बचाता। उसको दुख से क्लेष से बचाता। उसको नर्कों से बचाता उसको चौरासी से बचाता। ऐसा कोई साथी बनाया। कुछ नहीं। बस यही है आपके दुनियां का ढंग इतने दिन आपको होगये एक-एक श्वास आपका अरब खरब कुछ नहीं। सारे विश्व का सामान एक स्वांस के मूल्य पर कुछ नहीं। जो एक श्वास नाक से और मुह से निकल जाती है। जवाहरात इस सारे संसार में एक सांस की कीमत नहीं दे सकता। इतनी बड़ी चीज स्वासों की अमोलक है और वह आपको मिल गयी।

सब अपने प्रारब्ध से ही होता है

हम यही समझते है कि २३ घंटें आप अपने समय को दफ्तर में या बच्चों की सेवा में या सोने में या किसी के आदर सत्कार में जब खुदा ने किस्मत बनायी तकदीर बनायी

भगवान ने प्रारब्ध बनायी तो सब कुछ लेखा जोखा लिख करके सब रक्खा। और सारा सामान साठ–सत्तर अस्सी वर्ष का आपका एक जगह पर रख दिया। और ये कहा कि मैं सब सामान देकर तुमको जमीन पर पृथ्वी पर उतारता हूँ। तू जूते गांठना, झाड़ू लगाना। कपड़े बनाना। लिखना खेती करना। दुकान करना। अनेक आदि काम निमित्त मात्र करना। तो ये जो सामान श्वास–स्वांस पर हैं शरीर रक्षा के लिए मैं देता जाऊँगा। और जो तुम्हारी इच्छा हो अपनी स्वाधीन आजादी से तो तुम्हारे पास जो सामान रक्खा है उसके रखने और देने का पूरा अधिकार।

प्रेम और सेवा का भाव होना चाहिये

तुममें रहम हो तुममें दया हो तो एक बूंद पानी पिला देना। एक टुकड़ा खाना खिला देना। जरा सी दवा दे देना। बीमार को कन्धे पर लाद करके घर पहुंचा देना। और कुछ शब्द बोल देना सत्य बोल देना मुहब्बत कुछ प्रेम करना। और आदर सत्कार करना। ये आपको सभी हक़ूक अधिकार भगवान ने दे दिया।

अपने हिस्से से तुमने यदि कुछ दे दिया तो उसमें ले लोगे। और उसमें से ले लिया तो वह आप को दे देगा।

ये सब कुछ सामान उस परमात्मा ने आपकी जीवन रक्षा के लिए जब पैदा नहीं किया था तभी उसने रख दिया था।

नवीन कर्म करने का अधिकार मिला

नवीन कर्म करने के लिए काम करने के लिए आपको अधिकार दे दिया है कि हाथ से करो कान से करो। बुद्धि से विद्या से करो। हाथ से करो पैर से करो दिमाग से चित्त से करो दिल से करो। नवीन करो। बुरे काम मत करो।

शुद्ध आनन्द लो गन्दा नहीं

आनन्द लो। लेकिन क्षणिक आनन्द जो है वह शुद्ध इन्द्रियों का लो। गन्दा क्षणिक आनन्द मत लो। गन्दा लोगे तो दुख होगा परेशानी, बिमारी होगी अशान्ति होगी और हैरानी होगी। और शुद्ध लोगे इन्द्रियों का क्षणिक तो जी स्वस्थ रहेगा शान्ति रहेगी। मन को शान्ति दिल को शान्ति। तुम्हारे घर में सबको शान्ति। समाज में शान्ति।

अब क्या बताये आपको कुछ समझ में नहीं आया क्या आपने कर लिया।

दिन में काम रात में साधना करो

तो बाबा जी की बात बड़े ध्यान से सुने। दिन में काम शाम को बच्चों की सेवा। अगर इस काम में आप अपना वक्त लगा दो तो कोई भी बुराई आप से २४ घंटे में बनने वाली नहीं। जब शाम को कोई काम नहीं हुआ तो चारपाई पर बैठ के रजाई ओढ़ के, चद्दर ओढ़ कर बैठ गये अपनी आँखे बन्द की और महात्मा मुर्शिद, गुरु जो रास्ता ऊपर जाने का उन देशों में जाने का। लोकों में जाने का। ब्रह्मांड में जाने का जो रास्ता दे दें आप को। अपनी जीवात्मा को भगवान के दरवाजे पर बैठ करके जल्दी से जल्दी उसकी आनन्द की खबर लगा लो और उसका नाम पकड़ो। उसकी आसमानी आवाज पकड़ो। और वेदवाणी आकाश वाणी पकड़ो। और जीवात्मा को उसके साथ जोड़ कर ऊपर चढ़ चलो। और उधर में खुले हुए रोशन मैखाने उस खुदा की कुदरत के हैं।

उधर न दिन होता है न रात

उधर न सूरज निकलता है न डूबता है। न उधर में रात होती है न दिन होता है। न उधर हिन्दू, न मुसलमान न इसाई। न उधर दुख न उधर सुख। न उधर दफ्तर है न जन्मना न मरना। तुम इस जीवात्मा को जरा सा जिस्म

से ऊपर उठा दो और फिर तुम रोशनी में, प्रकाश में, लाइट में खड़े हो जाओ तो तुम्हारा मानव जीवन सफल हो जाये।

बाबा जी तो सुख शान्ति से रहने का ही पाठ पढ़ाते हैं

बाबाजी ने क्या बुरा किया। आपको अच्छी बात आती है तो पकड़ लो। नहीं आती है तो छोड़ दो। अगर चाहते हो कि मैं भी अपनी आत्मा का कल्याण करूं। और अपने इस शरीर को भी बना लूँ। शरीर का सुख भी प्राप्त कर लूँ। समाज में सुख से रहूँ। शान्ति से रहूँ। आनन्द से रहूं। और स्वस्थ रक्खूँ शरीर को। और भोजन मिले। कपड़े मिलें। आँखे अन्धी न हों। कान बहरे न हों टाँगे लगड़ी न हों। शरीर ठीक और सुन्दर हो। और सूरत बहुत अच्छी हो। तो अगर आप चाहते हो तो अच्छाई बुराई को समझ लो।

बुराई की आदत पड़ गयी। ये तो मैं जानता हूँ लड़का जब मिट्टी खाना सीख जाता है तो मां बाप भी दुःखी और बच्चा भी दुखी। और क्या कहता है पेट दर्द करता है। उससे कहा जाय कि मिट्टी खाने से पेट में दर्द होता है इसको छोड़ दे। लेकिन वह एक बात नहीं मानता। हाथ भी बांधो और मुंह भी बांधो। लेकिन कला खेल कर किसी न किसी तरह से मिट्टी उठाकर खा लेता है। दिन में रोता है। और रात में भी रोता है। मां भी परेशान बाप भी परेशान खुद भी परेशान। न खुद सोया न उसको सोने दे।

अच्छे बुरे कामों को समझोगे नहीं तो खुद भी रोओगे माँ बाप को रुलाओगे समाज को रुलाओगे देश को रुलाओगे। अच्छी बुरी बातों को समझ लो जो किताबों में लिखी है।

यही बात सभी महा पुरुषों ने कहा

मुहम्मद ने कहा कुरान में। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में कहा। ब्रह्मा ने वेदों में कहा। व्यास ने भागवत में कहा। और उसके बाद बुराई छोड़ दो अच्छाई के रास्ते पर चलो। यदि आप में कोई ताकत, शक्ति नहीं तो सहयोग दे देंगे महात्मा फकीर को कि लो इसे सहयोग ले लो। और ये सहयोग से अपनी आदत को बदल दो। अपने स्वभाव को बदल दो और सीधे रास्ते पर चलो। मान्यता भी हो जाये यश भी हो जाये। तुमको सब प्यार करें। मुहब्बत करें। और आप दूसरों से प्रेम करो। और वह भी आप से प्रेम करें। सारा संकट सारा दुख सब चला जाये।

सब सुख से रहें

बाबा जी क्या चाहते हैं ? सबको सब चीज मिलें सब आराम से रहें। सब सुख से रहें। सब ठीक से रहें। सब भोजन करें। सब फल खायें। सब सब्जी खायें। मकान में रहें। कोई बिमार न रहे। कोई किसी को मारे नहीं। कोई किसी को गाली मत दो।

अच्छाई बुराई तो समझना ही पड़ेगा

लेकिन बचा अच्छाई बुराई को तो समझना पड़ेगा। अगर समझोगे तो मैं आप को अभी बताये देता हूं। बड़े ध्यान से सुने आप। मैं जानता हूं। समझता हूँ और समझ रहा हूँ। और किताबों को समझ लिया है। उसमें क्या लिखा हुआ है ?

महापुरुषों को हमेशा कष्ट सहना ही पड़ा

मुहम्मद जब आये तो दरबदर ठोकर खायी। ईसा मसीह आये उन्होंने अच्छाई बुराई को बताया। उनको सूली पर चढ़ा दिया। तुलसी दास जी आये। उन्होंने अच्छाई बुराई को बताया तो अकबर बादशाह ने दिल्ली बुलाकर जेल में रख दिया। और राम ने अच्छाई बुराई की जब बात बताई तो सीता का हरण हो गया लंका में ले गया। कारण बन गया। कार्य हो गया।

Scanned with CamScanner

भविष्य वाणी के कारण ही कष्ट उठाना पड़ा

आप को ये समझना चाहिए। नारद जी ने कहा कि देखो भाई पाप कर्म मत करो कंस। नहीं तो तुम्हारी बहन से तुमको मारने वाला भान्जा पैदा होगा। उन्होने कहा ठीक। बुलाया बहिन बहनोई को। अच्छाई बुराई समझी नहीं उनको उठा कर बन्द कर दिया। सात बच्चे मार दिये। आठवां कृष्ण पैदा हो गये। जेल से निकल आये। थोड़ा बड़े हुए। अपने सगे मामा को अपने हाथ से अपने सामने खत्म कर दिया।

और फिर जब बड़े हुए तो क्या किया। उन्होने एक बिगुल बजाया और ढिढोरा बजाया उन्होंने क्या कहा? अरे भाई क्यों लड़ते हो? न ये जमीन तुम्हारी न ये धन तुम्हारा? न ये तुम्हारा। न मकान तुम्हारे। न ये जाति तुम्हारी।

न कुछ साथ आया न साथ जायेगा

तुम आदमी नंगे पैदा हुए हो। जब आये थे कुछ नहीं। जब जाने लगोगे तो सब रख लिया जायेगा। नंगा करके भेज दिया जायेगा। इधर आओ सब के सब।

उन्होंने पांडवों को समझाया कि देखो मैं इस काम के लिए आया हूँ। मैंने इतना बड़ा काम कर दिया।

कृष्ण ने समझाया मगर वे नहीं माने

अब मैं तुमको समझाना चाहता हूं। सारी दुनियां में जब बिगुल बजा तो लोगों ने कृष्ण का नाम समझा। लोगों ने कृष्ण के दर्शन किये और उनसे जाकर के मिले। सब लोगों को इकट्ठा किया उन्होंने और उनसे कहा कि देखो यह सब द्वापर का सारा विज्ञान मेरे सामने खतम कर दो। आगे कलियुग आने वाला है।

लेकिन कौरव और पांडव समझे नहीं। उन्होंने बहुत समझाया। बहुत उन्होंने ज्ञान दिया। कि देखो द्वापर जा रहा कलियुग आ रहा।

उन्होंने कहा मैं आपकी बात नहीं मानता।

उन्होंने कहा तैयार हो जाओ। और सबको तैयार किया। और अर्जुन को बुलाया। देखो अर्जुन तुम भी मान लो।

कहने लगे मैं मानने के लिए तैयार नहीं।

उन्होंने कहा-ठीक। तुम यही बैठो दो दिन। चार दिन आठ दिन १० दिन। उनको महीनो बैठाया और ये अन्दर का कपाट खोला। दिव्य नेत्र ज्ञान चक्षु जब खोल दिया और उनको बहिश्त और बैकुण्ठ जब दिखाई दिया तो वे देखते क्या हैं कि अरबो लोग जमीन पर पड़े हुए है। बेहोश।

उन्होंने कहा देखा अर्जुन मैंने सबको मार दिया। देखा तुमने? सब मरे हुए है।

कर्म करने में हम आजाद हैं

जिस आजादी को तुमने पाया कर्म करने के लिए तैयार हो जाओ। कर्म करने का अधिकार मिला है इसमें कोई तुमको दोष नहीं होगा।

उन्होंने कहा ठीक।

तैयार हुआ। अट्ठारह दिन में सारे विश्व के विज्ञान को द्वापर का। सारे विश्व के योद्धा कुरुक्षेत्र के मैदान में जाकर सबको भस्म कर दिया।

सब द्वापर का विज्ञान खतम कर दिया

फिर बुलाया उन्होंने। चलो यदुवंशियो आओ। देखो जो थोड़ा बहुत रह गया तुम इस विज्ञान को द्वापर के खत्म करो। आगे कलयुग आने वाला है।

उन्होंने कहा नहीं। मैं आप पर विश्वास नहीं करता।

चलो। नहीं विश्वास करते हो तो तैयार हो जाओ।

Scanned with CamScanner

उनको ले गये अपने सामने समुद्र के किनारे सबको इकट्ठा किया। ५६ करोड़ यदुवंशियों को अपने सामने बुलाही दिया।

अर्जुन और भीम कुछ न कर सके

फिर बुलाया उन्होंने पांचो पांडव और द्रोपदी को। उन्होंने कहा देखो पांडव जो तुम्हारे सामने गोपिकाएं खड़ी हैं उनको सब जंगल की ओर से कोल भील इनको लिये जा रहे। तुम लोग धनुष बाण और गदा उठाओ। और मेरे सामने गोपिकाओं की रक्षा करो। यही है धर्म।

दौड़े और तीर चलाया और उन्होंने वह गदा मारा। कुछ नहीं हुआ आँखों के सामने देखते-देखते ये कोल भील उन गोपिकाओं को खींच के ले गये।

पाण्डव भी मर गये

उन्होंने कहा चलो पांडवों, इधर आओ। अब मैं तुमको आदेश देता हूं कि सीधे उत्तर की तरफ मुंह करो। और इधर से चले जाना। कभी भी ऐसे पीछे करने नहीं देखना। चले जाओ काश्मीर की तरफ। चले जाओ बर्फीले उस मैदान में। चढ़ जाओ चोटी के ऊपर। अपनी द्रोपदी के साथ पहाड़ के ऊपर चढ़कर वैतरणी नदी में एक-एक करके गिर के मर जाना। देखो यह है परिक्षित। मैं इनको भेजे देता हूँ दिल्ली के पास। और हस्तिनापुर में जाकर थोड़े दिनों के बाद इनको राज दे दिया जायेगा। जिस दिन परिक्षित को यह राजतिलक होगा उसी दिन से कलियुग लग जायेगा। उसी दिन से कलियुग लग जायेगा।

महापुरुष की बात माननी ही पड़ेगी

मत मानो मुहम्मद की बात। मत मानो राम की बात। मत मानो कृष्ण की बात। मत मानो बौद्ध की बात। मत मानो ईसा मसीह की बात। लेकिन जो काम जिसको करना है उसका हुकुम है। उसकी आज्ञा है। उसका आदेश है। वह तो काम होने वाला है। होना है वह तो पृथ्वी पर सब होता है।

सभी धर्म पुस्तकों में लिखा है

मुसलमान भाइयों ईसाई भाइयो, हिन्दू भाइयो, तुम जरा अपनी किताबों को उठाकर फिर से देखो। १४ वीं सदी के अन्त में खुदा का पैगाम लेकर एक फकीर जमीन पर उतरेगा। सारी इन्सान जाति को खुदा का पैगाम सुनायेगा। जब वह वो पैगाम सुनाने लगेगा तो सारी भारत वर्ष की सड़कें गांव-गांव की काली हो जायेगी।

सभी बातें सत्य होगी

हजारों वर्ष पहले का कलाम लिखा हुआ फकीरों का कभी झूठा नहीं होता। कभी असत्य नहीं होता। वो वह कलाम उन्होंने लिख दिये हैं और उन्होंने वो रूहानियत, रूहानियत का खजाना और रूहानियत का इल्म जो साधना में बैठकर पाया। हजारों वर्ष पहले की बात को लिख दिया। अपनी किताबों को फिर से देखो।

उन्होंने लिखा बाईबिल में। ईसा मसीह ने कहा कि मैं जमीन पर दुबारा आऊँगा। तुम लोग सेवा गरीबों की करते रहना और प्रार्थना करते रहना।

भगवान का अवतार होता है

हिन्दुओं की किताबों में लिखा है कि मैं जमीन पर कब आऊंगा। मेरा जन्म कब होगा। मैं प्रादुर्भाव कब लूंगा। बड़े ध्यान से। जब करम, जब धरम, जब प्रेम, जब सत्य, जब न्याय, जब सेवा सत्कार, आदर खत्म हो जायेगा और धर्म नाम की कर्म नाम की, सेवा नाम की सत्य नाम की प्रेम नाम की मुहब्बत नाम की कोई वस्तु नहीं होगी। तो महान आत्माओं का जन्म भारत भूमि पर होगा और अन्तिम गत्वा उनको काम करना पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

मैंने किसी की बुराई नहीं की

मैं आप से निवेदन करता हूं। मुसलमान भाई इसको समझें। और इसाई भाई समझें। हिन्दू भाई समझें। हमने हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में न कभी इसाईयों की बुराई की। न कभी मुसलमानों की बुराई की। न कभी हिन्दुओं की बुराई की। न मन्दिर, न मसजिद, न कभी गिर्जाघर की बुराई की। न गंगा की न यमुना की न काबा की न मक्का मदीना की। कभी कोई बुराई नही की। हमने तो यही कहा कि उस खुदा भगवान के पैदा किए हुए इन्सान मनुष्य है। ये नंगे आये इनमें उसी की ये रूह और उसी का ये जीवात्मा। और इन जीवात्माओं का सबका एक मालिक। एक स्वामी एक परमात्मा। एक खुदा। एक गाड एक जिस्म। एक ढंग। एक रास्ता आने का एक रास्ता जाने का। जब दुनियां में एक ही रास्ता जाने का तो जिस्म के पैदा होने का जीवात्माओं के आने का और जाने का एक रास्ता है।

सब अपनी अपनी पूजा इबादत करें

हमने कभी ऐसी बात किसी के लिए कही हो? हम कहते हैं आप इबादत करो। हम कहते हैं पूजा करो हम कहते हैं भजन करो। हम कहते हैं साधना करो। हम कहते हैं प्रार्थना करो। हमने इसी का पाठ पढाया। हम कहते हैं झूठ मत बोलो। हम कहते हैं धोखा मत दो। किसी को मारो मत। किसी का कत्ल मत करो। जबरन किसी की वस्तु को छीनो मत। किसी की हिसा मत करो। और किसी पर बेरहम मत बनो सब पर रहम करो। सब पर दया करो। और ये मनुष्य हैं। तुम इन्सान बन जाओ। हैवान मत बनो। जानवर मत बनो। पशु मत बनो।

पूजा महापुरुषों की होती है

तुम मनुष्य बन कर देवता बन जाओ। तुम्हारी पूजा होने लगे। और ये वही लोग थे मुहम्मद जो इस जिस्म में आये। आज उनकी पूजा। राम की पूजा। कबीर की पूजा। शंकराचार्य की पूजा।

ये तमाम शक्तियां इसी जिस्म में शरीर में आई। मनुष्य बने आत्मा को जगाया ज्ञान को प्राप्त किया। शक्ति प्राप्त की। आनन्द को प्राप्त किया। और फिर उनको सब कुछ मिला। भूत भविष्य वर्तमान का जाना।

वे पढ़े नहीं थे बल्कि कढ़े थे

क्या मुहम्मद पढ़े थे? एक अक्षर नहीं। लेकिन जो कलाम लिख दिया. जो उन्होंने ने कलाम सुना। और आयतें सुनी वह हमेशा के लिए सत्य है। लेकिन आपने कभी सोचा? रैदास क्या पढ़े थे। क्या वह कबीर दास पढ़े थे? क्या वह मीरा पढ़ी थी?

लेकिन जो कुछ भी उन्होंने अपने शब्दों में लिख दिया था उच्चारण कर दिया उसको आप को समझना चाहिए।

बुरी चीज बुरी ही होती है

लेकिन किसी की कोई बात नहीं। चोरी आपकी बुरी चीज है इसको कोई मत करो। झूठ बोलना ये बुरी चीज इसको कोई मत करो। किसी का कत्ल करना सब समाजों में गुनाह है। सब समाजों में पाप है। इसको कोई मत करो। किसी के हक को लेना। जबरन। सब समाजो में सब जातियो में बुरा है एक सीधी साधी बात।

हम किसी की तरफ से नहीं आये

अब आप बाबा जी की सुनें। हम तो हमेशा आप के जिले में आते है। और आगे भी आते रहेंगे। हम किसी की तरफ से नहीं आये।

Scanned with CamScanner

लोगो ने ये प्रचार किया कि बाबा जी किसी की तरफ से आये। किसी के नहीं। हम आदमी के है। इन्सान के है। हिन्दू के हैं। मुसलमान के है। इसाई के है। उसमें जो रूह रहती है जीवात्मा रहती है हम तो उसके हैं। हम तो जनता है। आप भी जनता। हमसे आप झूठ मत बोलें हम आप से झूठ नहीं बोलें। आप हमको कुछ दे दें हम आप को कुछ दें दे। आप क्या दे दो बुराई, हम क्या दे दे अच्छाई। जो अधिकार आपको है वही मुझको है। मैं भी आदमी हूं आप भी आदमी हैं।

मैंने कभी नहीं कहा कि मैं महात्मा या भगवान हूँ

मैंने कभी नहीं कहा। मैंने यही कहा कि आदमी हूँ। मैंने आज तक नहीं कहा कि मैं महात्मा मैंने कभी नहीं कहा कि मैं फकीर। मैंने कभी नहीं कहा कि मैं कोई भगवान। मैंने कहा मैं भी आदमी और आप भी आदमी। और आप मुझसे मुहब्बत करें और मैं आप से मुहब्बत करूँ। बड़े ध्यान से। आप मेरे बीच में रहे मैं आपके बीच में। और आप मेरी तकलीफों को सुने और मैं आपकी तकलीफों को।

महात्मा सबको सुखी देखना चाहते हैं

जब आप पर तकलीफ आये तो न मुहम्मद सहन कर सकते हैं और न कृष्ण कर सकते है न कबीर न रैदास। ये सब क्या है आप का एक छोटा परिवार। अपने परिवार को कोई दुखी नहीं देखना चाहता। सब चाहते हैं हमारे चार बच्चे अच्छे रहें। एक बच्चा बदमाशी भी करे तो भी बाप उसको मारते भी है। चाहते हैं बच्चा अच्छा काम करे, सुखी रहे।

महात्मा के सब बच्चे ही हैं

इसी तरह से देश के अन्दर फकीरों महात्माओं के किए, क्या होते हैं, सब बच्चे। एक दृष्टि से देखते हैं कि ये सब भाई। एक दृष्टि से देखते हैं सब बहनें। वह अपना बच्चा है। या अपना भाई, या अपनी बहन। वे अपने भाव से जब वे दुख में तकलीफ में देखते हैं तो उनको दुख होता है। बस सीधी सीधी बात तो ये है। असली।

साधू उसी को कहते हैं

ये महात्माओ ने रामायण में लिखा कि भाई साधू नाम किसका है? जिसका दूसरों के दुख को देखते देखते हृदय पिघल जाये। मक्खन की तरह से पिघल जाये वही कहते हैं साधू। उसी को कहते हैं फकीर। उसी को कहते हैं महात्मा इन शब्दो में महात्मा फकीर और साधू। और जिसने अपनी रूह को, जीवात्मा को लगा लिया और दीदार व दर्शन किया है उसी को महान आत्मा कहते हैं और उसी को कहते हैं क्या फकीर। उसी को कहते हैं सन्त।

इस किराये के मकान को छोड़ने के पहले ये अपनी जीवात्मा को उस घर में उस देश में, उस वतन में पहुचा दें जहाँ अमृत बरसता हो। जहाँ आनन्द बरसता हो। जहाँ प्रेम बरसता है वहाँ पर जहाँ मुहब्बत ही मुहब्बत। ऐसी जगह इस जीवात्मा को मनुष्य शरीर में पहुचा दें।

अयोध्या में यज्ञ किया एक देवता प्रसन्न हुये

बात अब आप मेरी ध्यान से सुनें। हमको एक स्वप्न हुआ। जब मैं। एक साल के पहले हमें एक स्वप्न हुआ। सन् ७७ में। कि जाओ अयोध्या में। एक देवता को प्रसन्न करो। दुनियां बड़ी दुखी है। रो रही है। चिल्ला रही है। तड़प रही है। कोई कहता है रोटी नहीं। कोई कहता है कपड़े नहीं। कोई कहता ये कोई कहता ये।

हमको स्वप्न हुआ अयोध्या जाओ सरयू जी के किनारे साकेत महायज्ञ करो। एक देवता को उस यज्ञ से प्रसन्न करो। तो मैं मानव की

Scanned with CamScanner

खुशहाली के लिए दो चीजें दे दूं। एक तो गन्ना एक चावल।

चावल और गन्ना बहुत अधिक पैदा हुआ

बाबा जी ने ढिंढोरा पहले से पीटा कि चलो अयोध्या जी के पार सरयू जी के किनारे। मैं साकेत महायज्ञ करने जा रहा हूँ। एक देवता को विधिवत विद्वानों के द्वारा वेदमन्त्रो के सहित; प्रसन्न करूँगा भोजन देकर। और उससे जब देवता प्रसन्न हो जायेंगे, फरिश्ते, तो गन्ना और चावल इतना पैदा होगा कि जो ५० वर्षों में नहीं हुआ। मैंने ढिंढोरा पीटा। दुनियां में लोगों ने सुना। दीवार, पेड़ों, कागज पर छाया। कई लाख आदमियों का एक मजमा जमा। और उनके संरक्षता में, नर-नारियों के जमाव में, साकेत महा यज्ञ हुआ। २२ मई से २८ मई ७७ तक। एक देवता प्रसन्न हुए उसके बाद वर्षा हुई फिर चावल बोया गया। और वह गन्ना जो बो दिया था वह गन्ना जब बड़ा हुआ और वह गन्ना अभी तक खड़ा हुआ है। और वह गन्ना ऐसा कि सारी बरसात मील चीनी बनाने के चलते रहे लेकिन वह गन्ना खत्म होने वाला नहीं।

अहमदाबाद में दूसरा यज्ञ करने का स्वप्न हुआ

तुरन्त एक ख्वाब हुआ। एक स्वप्न हुआ कि तुम सीधे अहमदाबाद गुजरात में जाओ। वहां जाकर साबरमती नदी के बीचोबीच, बीच शहर अहमदाबाद में, सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ करो। ३३ करोड़ देवताओं को आवाहन करो। वेद मन्त्र विद्वानों द्वारा विधिवत और उनको भोजन कराओ। वे प्रसन्न हो जाये। देश की खुशहाली के लिए सारे भारतवर्ष में बहुत अनाज अबकी बार पैदा होगा। ६ महीने पहले दीवार पर और कागज पर तमाम लोगों को घूम-घूम कर पहले सुनाया और २५-१२-७७ से ये कार्यक्रम अहमदाबाद में प्रारम्भ हुआ।

वहां ३३ करोड़ देवता प्रसन्न हुये

करोड़ो नर-नारियों का जमाव ३३ करोड़ देवताओं की संरक्षता में। और ऐसा ५ हजार वर्ष सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ भारत में अभी नहीं हुआ। ऐसा हुआ। आप के आजमगढ़ जिले के लोग भी वहां गये थे। तमाम जगह के लोग पहुंचे। और गुजरात की समूची जनता उसको देखकर पागल हो गयी। और अभी जाकर पूछ आइये तो वह बतायेगी।

किसी से एक पैसे नहीं लिया

गुजरात के किसी भी आदमी से एक नया पैसा नहीं वसूल किया गया। न मुझे किसी चीन ने दिया न अमेरिका ने दिया। आज की तारीख तक। न मुझे उस सरकार ने दिया। न मुझको एक पैसा इस सरकार ने दिया। जो जनता की सरकार आप सोचते हो कि सायद बाबा जी को कुछ दे दिया हो। एक नया पैसा आज की तारीख तक बाबा जी को आप की बनायी हुई सरकार ने नहीं दिया।

भारत में उसके बाद बहुत अनाज पैदा हुआ

बड़े ध्यान से सुनें आप। और उसके बाद बाबा जी ने भ्रमण किया। इतना अनाज भारत वर्ष के किसानों के खेत में अभी तक पश्चिमी इलाकों में खड़ा हुआ कि ५० वर्षों में ऐसा अनाज पैदा नहीं हुआ।

मैं अपने भगवान पर विश्वास करता हूं

मैं अपने खुदा पर अपने भगवान पर अपने फरिश्तो पर अपने देवी देवताओं पर अपने नेक कामों पर अपने अच्छे कामों पर विश्वास करता हूं। रामायण पर गीता भगवान पर। कुरान पर। बाइबिल पर। गंगा पर, यमुना पर और विष्णु पर शिव पर और ब्रह्मा पर विश्वास करता हूँ। तैंतीस करोड़ देवता तुम्हारी खुशहाली

Scanned with CamScanner

के लिए प्रसन्न कर लिए गये। और उन्होंने १००० प्रस्ताव अपनी लोक सभा में पास कर लिए तुम्हारे लिए। और अब उन्होंने क्या कहा? पांच देवताओं को जल्दी प्रसन्न करो। कौन कौन, जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश। ये पांच देवताओं को जल्दी से प्रसन्न करो और उन देवताओं को हाजिर करो।

ब्रह्मा विष्णु और शिव इनको तीनों को पांचों देवताओं को प्रसन्न करने पर ये उपस्थित रहेंगे। तैंतीस करोड़ देवता प्रसन्न हो गये।

भोले शिव जी ने स्वप्न दिया

फिर एक स्वप्न हुआ गुजरात में। शिव जी ने काशी भोले शिव जी ने एक स्वप्न दिया कि आप ने सतयुग भगवन साकेत महायज्ञ में मुझको नहीं बुलाया। सीधे आओ काशी।

काशी पहुंचा रेती में आकर राजघाट से लेकर और राम नगर के किले तक गंगा जी के किनारे आकर सतयुग आने की स्वागत तैयारियां। यहां आकर उसका बिगुल बजाओ। मैं ११ दिन वहां उपस्थित रहूँगा। और मेरा भी डमरू बजेगा।

मेरा भी डमरू बजेगा। बाबा जी की बात को सुन लो। आप सुन लो आप की मर्जी। अर्जी मेरी मर्जी आपकी।

साकेत महायज्ञ काशी में होगा

१५ फरवरी से २५ फरवरी सन् ७९ में ये कार्यक्रम काशी नगरी के उस पार गंगा जी के किनारे रेती में होने जा रहा। दो करोड़ आदमियों का जमाव होगा। और शिव जी महाराज ने अपनी डमरू बजायी तो दो करोड़ आदमियों से ऊपर उपस्थित होंगे। यह अब क्या है लीला? क्या कुदरती खेल है यह तो भगवान समय आने पर आपको बता देगा।

आप इन्सान हैं। आप आदमी हैं। आप मनुष्य हैं। अक्ल रखते हैं। बुद्धि रखते हैं। अधिकार आपको है। अधिकार को गड्ढे में गिरा दो। अधिकार से काम ले लो। अधिकार से ऊपर उठ जाओ लेकिन बाबा जी की बात ध्यान से सुनो।

कलयुग में ही सतयुग लगेगा

कलयुग में कुछ हजार वर्ष बीतने के बाद। कुछ हजार वर्ष बीत गये। कलयुग में सतयुग आयेगा।

सतयुग लगेगा। आपने दिवालो पर देखा होगा।

मेरा नाम तुलसीदास है

और आप ने समझा मैं एक आदमी हूं। आपके सामने बैठा हूँ। नाम क्या है? तुलसी दास। क्या प्रचार करता हूँ? जय गुरुदेव नाम का। किसका नाम? खुदा का ईश्वर का भगवान का। जो जनम और मरण में नहीं आता। जो कभी आंखें बन्द नहीं करता। सुप्रीम पावर का नाम। यह किसी आदमी और जानवर का नाम नहीं। आश्रम वहाँ है मथुरा में।

आप के जिले में बहुत वर्षों से आ रहा हूँ। मैं कोई आप के लिए नया नहीं है। पुराना। मैंने कभी भी आप को धोखा नहीं दिया। बात उसको समझ लें। आपके समझने में आपके सामने जो कुछ मंच पर बैठकर या खड़े होकर बोलूगा इसमें से कोई बात झूठ होने वाली नहीं।

कलियुग में सतयुग आयेगा

पड़े ध्यान से। कलयुग में सतयुग लगेगा। कलयुग खतम नहीं होगा। कलयुग में सतयुग लगेगा। और बहुत हजार वर्ष तक सतयुग लगा रहेगा। और उसके लिए आप सभी हिन्दू मुसलमान, ईसाई तैयार हो जांय। उसकी स्वागत तैयारियों के लिए। वह सतयुग सामग्री लेकर, जमीन पर थाली और परात में, उतरेगा। जिसमें बहुत तरह का अनाज

Scanned with CamScanner

और बहुत तरह की सब्जी और बहुत तरह का फल। और बहुत तरह का सोना चांदी हीरे, जवाहरात बहुमुल्य वस्तुएं। उस परात में लेकर सुख समृद्धि लेकर उतरेगा। आप हिन्दुस्तान के मनुष्य अपने दरवाजे से बाहर निकल कर उसका स्वागत करना। सत्कार करना। उसका अदब करना, उसकी इज्जत करना। वह क्या कहेगा? इन्सान हो। आदमी हो। अक्ल रखते हो। बुद्धि रखते हो।

ऐसा न कह दे कि भारत भूमि पर जहां बड़े बड़े फकीर, और महात्मा आये यहां सब के सब जानवर और पशु हैं।

सतयुग का ढिंढोरा पिटता रहेगा

इस लिए बाबा जी यह ढिंढोरा और यह बिगुल बजा रहे हैं। २५-१२-७७ से शुरू हो गया और यह बराबर बजता रहेगा कुछ वर्षों तक। देश का, हर आदमी चाहे जंगल में रहता हो, चाहे वह खेती करता हो, सबके कानों तक सतयुग की स्वागत तैयारियो का बिगुल, और सतयुग के आने का बिगुल आप को सुनने को मिल जायेगा। और बाबा जी आप को सब कुछ बतायेंगे।

समय से बीज डाल दो

बात बड़े ध्यान से सुनें। आप किसान हो। आप मोटी बुद्धि रखते हो। हम जिसमें विश्वास रखते हैं एतकाद रखते हैं अपने खुदा पर। क्या रखते हैं? बाबा जी की बात को मान लो और चले जाओ बैल लेकर खेत में। एक बार खेत जोतो उसके बाद क्या करो? बीज डाल दो। जब पौधा निकल आये उसके बाद पानी की जरूरत पड़े तो बादल आयेंगे और पानी खेत में बरसा कर चले जायेंगे।

बादल आकर पानी बरसा जायेंगे

फिर जब जरूरत पड़ेगी पौधा बढ़ जायेगा। फिर बादल आयेंगे। जरूरत पड़ेगी बादल आकर पानी बरसा जायेंगे। और चले जायेंगे।

फिर पौधा बढ़ गया पानी की जरूरत पड़ी बादल आये। पानी गिरा दिया। चले गये। बाल निकल आयी।

जरूरत पर आप को सिचाई नहीं करनी पड़ेगी

फिर जरूरत पड़ी। फिर बादल आ गये। पानी गिराया और चले गये। बस इतने में आप के खेत की बाल पक गयी। काट लीजिए आप।

समय समय से गर्मी जाड़ा बरसात होगी

समय से बरसात समय से जाड़ा, समय से गरमी। लेकिन बाबा जी की बात को सुनना पड़ेगा। वह क्या कि सतयुग आयेगा। क्या लायेगा? किसान के एक बीघा खेत में किसान के एक एकड़ खेत में १५० मन गेहूँ या १५० मन चावल पैदा होगा। १५० मन गेहूं या १५० मन चावल एक एकड़ खेत में पैदा होगा।

एक बीघा किसान के खेत में १०० मन गेहूँ या १०० मन चावल पैदा होगा। चार बीघा खेत में ६०० मन गेहूँ या ६०० मन चावल पैदा होगा।

कितना खाओगे साल में? ५० मन। कितना बचेगा साल में? ३५० मन।

इतना गल्ला बचा रहेगा कि कोई किसान गरीब नहीं रहेगा

कितन खाओगे ५० मन? कितना बचेगा? ५५० मन। जिस किसान के घर में ५५० मन गेहूँ जिस किसान के घर में ३५० मन गेहूं रखा रहेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान के किसानो की गरीबी दूर हो जायेगी।

रोज रोटी भगवान देता है आदमी नहीं

मैं इसमें विश्वास रखता हूँ। लेकिन कोई आदमी कहे कि मैं तुमको रोटी दूंगा। मैं तुमको रोजी दूंगा। वह सबसे बड़ा मूर्ख और सबसे बड़ा बेवकूफ। सबसे बड़ा स्वार्थी और सबसे बड़ा कम्बख्त। रोटी कौन देगा? रोजी कौन

Scanned with CamScanner

देगा ? मेरी किस्मत, मेरा काम और खुदा की मेहरबानी। खुदा की रहम भगवान की दया।

तुम जरा सा काम करो। उतने ही में खुदा की मेहरबानी और दया हो जाय। रोजी रोटी खुदा देता है। कोई आदमी बेअक्ल का नहीं देता।

रोजी रोटी पर बिक मत जाओ

इसलिए रोजी रोटी के पीछे अपना ईमान मत बर्बाद करो।

बिक मत जाओ अपने दीन को मत खोओ। अपने धरम को मत खोओ। अपने सत को मत खोओ अपने अक्ल को मत खोओ। अपनी आत्मा को गढ्ढे में मत गिराओ। अपनी बुद्धि को नष्ट भ्रष्ट मत करो। यह रोजी रोटी वह देता है। और कोई नहीं देता है। जिसने यह समझ लिया कि वह नहीं यह देता है उसने अपने ईमान अपने कौम अपने धरम अपने एतबाद और अपने रूह को छोड़ दिया। इसलिए इसका कोई भी ईमान धरम नहीं।

सभी अपने धर्म कर्म पर आ जाओ

इसलिए हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों अपना काम करना अपना धर्म, अपना कर्म अपना कर्तव्य। इसको स्वतन्त्रता काम करने की। कहने सुनने की सोचने विचारने की हाथ पैर चलाने की कपड़ा पहनने की रात को सोने की मिली है, उससे काम करो। इतने में सब कुछ वह देगा। मैं उस पर विश्वास रखता हूँ। बड़े ध्यान से बाबा जी की बात को सुनो।

आज स्त्रियां बिना गहने के हैं

सीधी सीधी बात ये है। यह हैं तुम्हारी लक्ष्मियां। ये तुम्हारी देवियां हैं। मुझे बड़ा दुख है। मुझे बड़ी तकलीफ है। ये नंगी बैठी हैं। न कान में, न नाक में, न गले में। न उनकी कमर में। न उनके हाथ में। न उनके पैरों में।

ये देवियां ही महापुरुषों को पैदा करती है आगे ऐसा समय आ रहा है कि ये गहने से लदी रहेंगीं

यह है लक्ष्मी ये है देवी। ये लाल बनाती हैं, हीरा बनाती है। किसको बनाया मुहम्मद को। तुलसीदास को। राम को कृष्ण को। ईसा मसीह को। महावीर को। शंकराचार्य और त्यागियों को तपस्वियों सत्यवादियों को बुद्धि वादियों को। महान आत्माओं को। इन्होंने बनाया। ये बनाती है लाल। और इनमें आपने इनकी बेइज्जती की। इनका निरादर किया। आप को यह कभी नहीं। ये धन धान्य से ये पृथ्वी किस तरह से फलेगी फूलेगी कि ये देवियां सोना-चांदी हीरे जवाहरात। गांवों की देवियां आप को ऊपर से लेकर नीचे तक लदी हुई दिखायी देंगी। तब आप को पता चलेगा कि बाबा जी ने कोई आवाज पहले से लगायी थी।

नोट कर लो आगे समय ऐसा आ रहा

दिल पर लिखो, दिमाग पर लिखो, कागज पर लिखो दीवाल पर लिखो पेड़ पर लिखो। लेकिन याद रखना, जब आपके सामने यह घटनाएं आएं तो यह कहना कि कोई कहता था। समझता था। बताता था। होश में ले आता था। लेकिन आप न मानों आपकी मर्जी। मर्जी मेरी मर्जी आपकी है। बात बाबा जी की बात बड़े ध्यान से सुनें। मैं कुछ कहना चाहता हूं। वह आप ध्यान से सुने।

मैं तो यह चाहता हूँ

बड़ा सौभाग्य है अच्छा दिन है हम सबके हमारे आपके लिए। हम तो सबके लिए कामना करते हैं कोई भी हो। हे भगवान हे खुदा सबको अच्छी सद्बुद्धि दो। अच्छे कामों को सबको ताकत दो। सब नेक काम अच्छे काम करें। हम किसी के लिए बद दुआ खुदा से मांगते ही

Scanned with CamScanner

नहीं। सबके लिए ऐसी प्रार्थना करते हैं कि कोई भी आदमी जमीन पर हो। किसी भी जात का हो हिन्दू मुसलमान कोई भी हो। सबके सब मुहब्बत और प्यार से रहें। सबको भोजन कपड़ा मिले। सबको यथा उचित जिसके पास जैसी काम की यथा शक्ति हो। उसको काम मिल जाय। सबको कपड़े मिलें सबको मकान मिले और सब लोग एक दूसरे के काम आयें, लेकिन आप बात को नहीं समझते हो तो मैं क्या करूं?

विभिन्न प्रकार के नशे

देखो पांच प्रकार के नशे होते हैं। एक तो नशा है धन का, राज्य का। दूसरा नशा विद्या बुद्धि का। बुद्धि का नशा विद्या का बड़ा खराब। जब आदमी इसको समझ लेता है कि मैंने बहुत समझ लिया पढ़ लिया। उससे कहा जाय घड़ी बनाओ। उससे कहा जाय जूते गांठो। उससे कहा जाय कपड़े सिलो। तो वह कहेगा बी० ए०, एम० ए० वाला कि मुझे नहीं आता। तो क्या आयेगा?

इससे मालुम यह होता है कि सब आप नहीं जानते फिर भी आप ५० में ५५ नम्बर से नकल करके पास हुए। बी० ए० एम० ए० जो पास किया उस पर भी बुद्धि का इतना अभियान कि मैं सारी दुनियां को जानता हूं।

तो सुनें आप तीसरा नशा शराब का और चौथा नशा भांग का। पांचवां नशा सुल्फे गांजे अफीम का।

भांग का नशा कैसे उतरता है

भांग का नशा जब उतारना चाहो तो दस दाने भुने हुए चने के खिला दो। एक मिनट में नशा भांग का उतर जाएगा।

सुल्फा गांजा का नशा कैसे उतरता है

जब सुल्फे गांजे का नशा चढ़ जाए और आप एक मिनट में नशा उतरना चाहें तो उसको भैंस और गाय का जरा सा घी पिला देना। एक मिनट में सुल्फे गांजे का नशा उतर जाएगा।

शराब का नशा कैसे उतरता है

और जब कोई शराब पीए और नशे में आकर सड़क पर गिर जाए। और आप हजारों आदमी चले जा रहे। इसको क्या हो गया। तो आपने कहा कि शराब पिए हैं। नशे में पड़ा हुआ है। इक्का आएगा, टांगा जाएगा। कुत्ता आयेगा मुंह सूंघेगा। पेशाब करेगा। आप चाहोगे कि एक मिनट में इसका नशा उतर जाए। और गरीब ये बेचारा सीधे अपने घर चला जाए। मेहरबानी अगर तुम कर सको तो बाबा जी का फार्मूला ले लो। दया कर सको। क्या करना? पैर का जूता उतारना। अपने हाथ में पकड़ कर और जोर से उसके सिर पर धड़ाक से दो मारना। एक मिनट के अन्दर नशा न उतर जाय। और सीधे अपने घर को चला जाएगा।

शराब क्या चाहती है? जूता। काहे से उतरती है? जूते से।

शराब में एक हजार बुराई

कितनी शराब में बुराई होती है? एक हजार। शराबी क्या करता है? झूठ बोलता है। धोखा देता है। वादा खिलाफी। जिससे ले लेगा उसका कभी नहीं देगा। चोरी करेगा। कतल करेगा। डकैती करेगा। पड़ोसी को गाली देगा। सोने नहीं देगा। जमीन को बेचेगा। मकान को बेचेगा। सोना बेचेगा, कपड़े बेच देगा। स्त्री को गाली देगा बच्चों को देगा। जेवर गात को छीनकर ले जाएगा। आपको खाना नहीं खाने देगा न सोने देगा।

यहां के अधिकारी क्या कहते हैं

शराब में एक हजार बुराइयां। ये पूछिए

Scanned with CamScanner

जाकर अधिकारियों से कानपुर में, और बाराबंकी लखनऊ; उन्नाव।

वहां के अधिकारी यह कहते हैं, बड़ा अच्छा हुआ कि शराब तो पीना छोड़ दिया क्योंकि दिन रात हम जगते थे कि यह छुरा चल गया। वह चल गया। वह कत्ल हो गया। वह हो गया। वह लड़ाई हो गई वह हो गई। अब तो कम से कम, आराम से सोते हैं।

शराब के न पीने से ६० फीसदी बुराई खतम

अगर हिन्दुस्तान के लोग शराब पीना छोड़ दें, तो हिन्दुस्तान की ६० फीसदी बुराइयां जरायम की, कत्ल की, चोरी की, छुरेबाजी की खतम हो जाय। कम से कम ये बातें। महम्मद ने कहा था ऐ मुसलमान भाइयों, अगर तुमने एक कतरा भी शराब पी लिया तो अपने हक, ईमान और अपने वसूल से तुम लाखों मील दूर चले गए उस हकीकत से। अरे हिन्दुओं; रामायण में लिखा हुआ है कि गंगा जल को लाकर उसको गरम करके शराब बनाई जाय तो उसको भी महात्मा पान नहीं करते हैं।

पांचों भूत भी सवार हैं

कितना बड़ा अवगुण। लेकिन आपने यह बात तो सोची नहीं, काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार ये बड़े बड़े जालिम भूत आप के ऊपर चढ़ गये। और आप का शैतान २४ घन्टे पटकता जलाता। लड़ाता भिड़ाता। बेइज्जत करता तबाह करता। और आप को कुछ पता ही नहीं है कि मेरे ऊपर मैं कितने ही भूत सवार हो गये। काम ने पटका क्रोध ने पटका लोभ ने पटका अहंकार ने पटका और सबसे बड़ा मन। यह शैतान तो २४ घन्टे आप पर सवार रहता है अरे भाई बचो नहीं तो तुम बरबाद हो जाओगे। बाबा जी की बात को सुनो।

प्रकृति का थप्पड़ लगेगा

अगर आप ने मेरी बात को माना नहीं। मैं आदमी हूँ। मैं कोई फकीर और महात्मा नहीं और न मैं कोई भगवान हूं। अगर आप ने बाबा जी कि बात को सुना और माना नहीं। क्योंकि अर्जी सिर्फ कर रहा हूं मर्जी आपकी। ऐसा थप्पड़, ऐसा लप्पड़। ऐसा मुक्का, ऐसा डण्डा। ऐसा सोटा, ऐसा झटका ऐसा लटका। और ऐसा पड़ेगा कि आपके दिल पर ऐसा तोप की तरह से धड़ाका यहां पर बजेगा। एक सेकेण्ड के अन्दर धड़ाक से चित्त गिरेंगे।

तब बाबा जी की बात याद आयेगी

ऐसा हिन्दू मुसलमान ईसाइयों तुम्हारे दिल पर धक्का लगेगा, सदमा लगेगा इसी सदमें में सभी लोग उलझ जायेंगे। तब बाबा जी की एक एक बात आपको याद आयेगी। अभी तो आप समझ रहे हैं कि ऐसे ही कह रहे हैं।

लेकिन बाबा जी को यह पैगाम सुना लेने दीजिए। यह मेरा नहीं है। उसका है। उसने स्वप्न दिया है कि तुम तमाम इन्सान, मानव जाति को सुना दो।

देवता काम करने चारों दिशाओं में निकल गये

चारो तरफ देवता १००० प्रस्ताव पास करके वे चारो दिशाओं में घूमने लगे। उन्होंने ये कहा कि चारो तरफ पूरब पश्चिम, उत्तर दक्षिण ये तो दिशायें काम करने को मुझको दो। और बीच में तुम बिगुल बजा दो। सतयुग के स्वागत तैयारियों का कि सतयुग साकेत महायज्ञ। सतयुग आयेगा। उसको सबको सुना दो।

विदेशों का कर्जा माफ होगा

देखो नर नारियों, विदेशों का जितना कर्जा तुम्हारे ऊपर लदा यह कैसे अदा होगा।

Scanned with CamScanner

एक एक सिर का बाल गिनकर अलग कर दो। इतना कर्जा तुम्हारे ऊपर प्रत्येक हर आदमी, हर इन्सान पर लदा हुआ है। यह कैसे दिया जायेगा उसको सुनों। वे फरिस्ते जिन्होंने १००० प्रस्ताव पास कर दिये, कानून (Law) नियम बनूल। उसमें से ६ तो मैंने बताया। ९९४ मैंने नहीं बताया। उन्होंने कहा फरिश्तों ने कि जब मैं हुक्म दूँ, आदेश दूँ तब लोगों को बताना। केवल ६ बताये हैं ६।

देवताओं ने देश के इन्सानों को सुनाने को कहा

उन्होंने ये कहां हिन्दुस्तान के लोगों को इंसानों को आदमियों को यह सुना दो कि चारों दिशाओं को मैंने ले लिया। मैं अब विदेशों में जाऊंगा। बड़े बड़े राष्ट्रपतियों के। यह प्रस्ताव पास हुआ है २५-१२-७७ से ५-१-७८ के अन्तर्गत। साबरमती अहमदाबाद के बीचोबीच शहर में। ३३ करोड़ देवताओं के विचार विमर्श के बाद ये प्रस्ताव उन्होंने अपनी सभा में पास कर दिया। और वे बड़े बड़े राष्ट्रपतियों के मस्तकों पर जाकर बैठ जायेंगे। हिन्दुस्तान का समय आने पर सम्पूर्ण कर्जा माफ करा देंगे। सुन रहे हो इन्सानों? क्या कहने जा रहा हूँ। कर्जा माफ करा देंगे।

बच्चे चाहते हैं प्यार

बच्चो, स्कूलों में पढ़ो। मैं जानता हूं बच्चों को चाहिए मुहब्बत। बच्चों को प्यार चाहिए मैंने हिन्दुस्तान में इतना बड़ा संदेश जिसमें १०-१० लाख आदमी इकट्ठे हो रहे। २८ मार्च से और ७ अप्रेल तक ८ दिनों में ४० लाख आदमियों को बैठाल करके सुनाया। इसी उत्तर प्रदेश में। कोई भी एक भी आवाज किसी भी बच्चे की, स्त्री पुरुष की, नहीं मालुम हुई। इतनी शान्ति के साथ। बच्चे प्रेम चाहते हैं। मुहब्बत चाहते हैं। बुढ्ढे भी चाहते हैं। इसाई भी चाहते हैं। मुहब्बत और प्रेम सबसे बड़ी नियामत सबसे बड़ी दौलत। सबसे बड़ी सम्पत्ति यह कहीं पेड़ों में क्यारियों में नहीं लगती। और न ऊपजती हैं। ये तो जब कभी उसकी मेहरबानी और उसकी कृपा होती है तभी प्राप्त होती है। वह आये इंसानी शकल में। आकर के बरसा दिया। उन लोगों को मुहब्बत प्यार चाहिये।

माता पिता तुम्हारे लिए कष्ट उठाते हैं

सबका सब उस प्यार और मुहब्बत को लेकर, अपने खजाने अपनी दौलत अपनी सम्पत्ति को लेकर आनन्दित हो गये। ये बड़े बच्चों, तुम्हारे माता पिता हैं जो सुबह से शाम तक खेतों में काम करते हैं। अपने नहीं खाते हैं अपने नहीं पहनते हैं। पर अपने बच्चों को ढकेलते रहते हैं। स्कूल में जाओ कालेज में जाओ। यूनिवर्सीटी में जाओ। पटना चले जाओ, बम्बई चले जाओ, बंगलोर चले जाओ। हमारी आकांक्षा जो हमारी आशा है फलो, फूलो। तुम खाना खाओ तुम कपड़े पहनो परिवार देश में रहो पर देश में कोई तकलीफ तुमको न हो।

तुम माता पिता की आशा को पूरा करने के के लिए ठीक से अध्ययन करो

तुम्हारे माता-पिता जब इस तरह की आशा लगाकर तुम्हारे लिये बैठे हैं और हम भी बैठे हैं आशा लगाकर कि पूरी विद्या अध्ययन कर लो। चाहे बंगलौर हो चाहे बनारस हो, चाहे लखनऊ हो चाहे बम्बई और पटना हो। पूरा समय देकर पूरी विद्या अध्ययन कर वापिस चले आओ। और बाबाजी को यह मौका देवताओं को प्रसन्न करने के लिए थोड़े दिन का दे दो।

Scanned with CamScanner

देवता प्रसन्न होंगे तो सबको सब मिलेगा

सबको काम । सबको कपड़े । सबको मकान । सबको भोजन । कोई आदमी किसी तरह से दुखी नहीं रहेगा । लेकिन देवताओं को प्रसन्न नहीं करने दोगे तो अजी मेरी मर्जी आप की । आप जानो आप का काम जाने । बाबाजी समय आप से चाहते हैं ।

इसलिए समझ लो । सबके लिए । हो किसी एक के लिए नहीं लेकिन नहीं । नहीं समझोगे तो ये कहोगे कि बाबा जी भी व्यक्ति विशेष की तरफ प्रचार करते हैं । नहीं ।

यह हक और ईमान की लड़ाई है जो सबने लड़ी

हक और ईमान की लड़ाई मुहम्मद ने । न्याय और सत्य को लड़ाई राम ने । १४ वर्ष जंगल में आगे गये । बन्दरो से कोल भीलो से मित्रता की । आगे चले गये । फिर उन्होंने, सीता को ले गया । वह कारण बनकर कार्य हुआ । वह थी हक और ईमान की लड़ाई ।

सभी महापुरुष हक और ईमान के लिए लड़े

मुहम्मद ने की । ईसा ने की । बुद्ध ने की । राम ने की कृष्ण ने की । महावीर ने की । शंकराचार्य ने की । जो भी आया कबीर. तुलसी दास जो भी आया हक और ईमान की लड़ाई और न्याय का लड़ाई बराबर करते रहे

तुम्हारे दुख को देखकर सद्गुण के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं

इसलिए आप को दुखी देखकर जो कोई आयेगा न्याय और सत्य को लड़ाई करेगा । वह न्याय और सत्य को लड़ाई क्या है ? आराम हो । प्रेम की सच्चरित्रता की सदाचार की । सत्यता को, आनन्द को । यह उसकी लड़ाई है । और कोई लड़ाई नहीं सब आनन्दित हो जाय । सदाचारी हो जाय सत्य-वादी हो जाय । सब परस्पर प्रेम करे । मिल जुलकर रहे । सबको सब वस्तुये शरीर रक्षा के लिए मिलें । मिल जाय और रूह को जीवात्मा को पहुँचा दो उधर स्वर्ग में बहिश्त में । काम इधरबन जाय ।

कुछ माह बाद देखना

यह लड़ाई सबने लड़ी । और वह लड़ाई सबको लड़नी पड़ेगी । यह छोटे छोटे लोग अभी आपने क्या देखा ? जरा ४-५ महीने और होने दीजिए । यह उसका हुकुम यह उसका ख्वाब है । उसका स्वप्न है ५-६ महीने गुजरने दीजिए और फिर उसके बाद तमाशा देखिये ।

१० करोड़ प्रेमी हो जायेंगे

बड़े ध्यान से सुनें आप । ३१ मार्च ८० के अन्त समय तक १० करोड़ आदमी इस भारत में तैयार हो जायेंगे जिनको अंग्रेजी शब्दों में Follower और उर्दू शब्दों में मुरीद । और हिन्दू शब्दों में प्रेमी । इनसे कहा जायेगा कूद पड़ो पानी में । आग में कूद पड़ो । बरसात में कूद पड़ो । ये नर नारी कूद पड़ेंगे । यह उनको होगी परीक्षा ।

अगर नहीं मानते तो गड्ढे में गिरोगे

आप को क्या मालुम क्या बदलेगा । क्या होने वाला है । कुछ नहीं है । आप तो अभी देखते हैं आगे अंधेरा है गड्ढा । आप को बचाना चाहता हूं कि आगे अंधेरा है । गड्ढा है गिर मत जाना नहीं तो कोई निकालेगा नहीं । चिल्लाओगे । लेकिन तुम नहीं मानते हो तो चले जाओ । गिर जाओ गड्ढे में । रोओ चिल्लाओ । हमको क्या है ? हम तो इतना ही अपना हक अदा कर सकते हैं जितना अधिकार है । तुम अपने अधिकार का दुरुपयोग करो तो गड्ढे में गिरो । जाकर के उसमें । हम क्या करेंगे उसके लिए । इसलिए जो तमन्ना जो इच्छा । जो तड़प जो जलन हुई वह तो यह हुई है उसको सुनो समझो ।

Scanned with CamScanner

मैंने कोई अनुचित तो नहीं कहा

सीधी सादी बातें। मैंने कोई अनुचित बात की हो तो हमारी मत मानिये। उचित बात हो सबके लिए तो आप मान जाओ। न हमने बटवारा किया है किसी कौम का। नंगे आये कोई नाम लेकर। कोई जाति लेकर नहीं। कोई विद्या लेकर नहीं। जाने लगोगे जाति यहां विद्या यहां। कपड़ा यहां। सब कुछ रखवा कर आप को नंगे भेज दिया जायेगा।

सबको नेक और अच्छी बातें बताता हूं

इस लिए हमारा झगड़ा किसी से नहीं। हमारे पास कोई भी आये हमारी सबसे मुहब्बत सबसे प्यार। सबको अच्छी नेक बातें बता दी नेक रास्ते पर चलाना। नेक कामों को कराना ये अपना काम अपना वसूल है। और अपना कर्तव्य है। ये आप को समझना है कि नहीं।

हमारी बात बड़े ध्यान से और थोड़ी सुन लें। मेरी तबियत जरा आज ठीक नहीं है दिन से। लेकिन बुखार होते हुए भी मैं आप को कुछ न कुछ सुना रहा हूं। आप इच्छा लेकर दूर दूर से आये हो कुछ जानना चाहते हो। मैं आप से प्रार्थना करूंगा। मैंने विद्यार्थियों से किसानों से। व्यापारियों से। दफ्तर के लोगों से। अधिकारियों से।

आन्दोलन हड़ताल मत करो

आन्दोलन मत करो। हड़ताल मत करो। तोड़-फोड़ मत करो। ये सारा नुकसान जो होगा कारखाने का दफ्तर का। दुकानों का या अन्य सामानों का ये सब का सब नुकसान जो किसान जंगल में खेत में काम करते है उनको देना पड़ेगा। और विदेशो का जो कर्जा है वह भी किसानों को देना होगा शहर का कोई भी आदमी एक नया पैसा नहीं देता।

सब किसानो को अदा करना पड़ेगा

ये नंगे होगे। खून बहायेंगे पसीना बहायेंगे इस लिए इनको ऐसे संकट से ऐसी तकलीफ से मेहरबानी करो। दया करो। इनको ऐसे मुसीबत से बचाओ।

मत आन्दोलन करो। मत हड़ताल करो। मत तोड़ फोड़ करो। बाबा जी ने इसी स्थान पर अभी थोड़े दिन पहले कहा था कि आप १८ महीने का मुझे देवताओ के प्रसन्न करने का अवसर दे दीजिए। और दो साल काम करने का। तो ये देवता क्या करेंगे? इनको प्रसन्न करने को जा रहा हूँ। दिल्ली में लखनऊ में पहुँच जायेंगे लोगों के मस्तक पर। जो आप की सेवा करते हैं उनके मस्तक पर बैठ जायेंगे। सब विदेशों के राष्ट्रपतियों के मस्तक पर बैठेंगे आपके कर्जे को माफ करा देंगे। तो इनके भी मस्तक पर बैठकर दिल और दिमाग पर बैठकर ऐसी चीज उनको देंगे कि सारा संकट तुम्हारा दूर हो जायेगा।

मौका देना ही पड़ता है

तुम उन फरिश्तों पर देवताओं पर विश्वास करो। और जरा सा मौका दो। बच्चे को मौका दो बढ़ जायेगा। स्त्री का मौका दो खाना दो घंट में बना देगो। बच्चे को मौका दो दस साल मे मैट्रिक पास हो जायेगा। किसान को मौका दो। चार महीने में फसल तैयार हो जायगी अगर आपने समय नहीं दिया तो बचा, कुछ भी मिलने वाला नहीं।

मैं भी यहां भारत में घूमता हूँ कर्जा देता हूं और टैक्स देता हूँ। मैं भी यहां तकलीफ में रहता हूँ। मैं भी देखता हूं।

चीनी गुड़ के भाव तो कम हो गये

बड़े ध्यान से सुनें। मैं भी अभी पिछले महीने में २ रु० ४५ पैसे की एक किलो चीनी खरीदी

३ कुन्तल। बाइस रुपये में ४० किलो गुड़ खरीदा। मैं वहां महाराष्ट्र में गया। तो २० बोरियां चावल की रक्खी थी। मैंने कहा ये क्या है? ये अलग अलग चावल क्यों?

बोले अरे महाराज महात्मा जी ऐसा बढ़िया चावल अभी मैं अपनी जिन्दगी में नहीं देखा इतना खूशबूदार चावल कभी नहीं खाया।

मैंने कहा ऐसा क्यों? चावल कहाँ से आया?

पता नहीं किस मुल्क से आया? लेकिन ऐसा चावल कि बाजारों में वेरायटीज लगी हुई बोरियो की। और इतना खाने में स्वादिष्ट मजेदार।

ये नौसिखुये हैं मगर काम ठीक कर रहे

असली बात तो यह है कि ये बिचारे जो दिल्ली में लखनऊ में ये ४-६-८ महीने में क्या कर सकते हैं? लेकिन जो भी उन्होंने किया अभी नौसिखया थे। आपके पास तक उन्होंने अपने काम का यानी आराम नहीं पहुँचा पाया। जो उन्होंने काम किया है वह आपको समझा लेने कि मैंने ये काम किया है। क्योंकि वे बिचारे कुछ जानते नहीं थे। न कागज जानते हैं। न काम लेना। लेकिन जो कुछ भी उन्होंने काम किया तेल, घी, चीनी, गुड़, कपड़ा। कितने एकड़ जमीन का लगान माफ। ये काम, वह काम जो कुछ भी उन्होंने जो कुछ भी अपनी अनसमझता से किया है वह आपके समाने है।

देवता प्रसन्न होकर खुशहाली देंगे

उनको मौका दे दो थोड़े दिन का तब तक मैं देवताओ को प्रसन्न कर लूँ। ६० साल तक जिन पेड़ों पर, दरख्तों पर फल नहीं लगते थे उन पर भी फल लगने लगेंगे। और मैं क्या कह सकता हूँ आपकी खुशहाली के लिए।

गरीबी कोई दूर नहीं कर सकता

मैं और क्या कहूं। अगर तुम चाहते हो कि मैं गरीबी दूर कर दूँगा तो चलिए मैं आप को बैठा देता हूं। कि आप गरीबी दूर कीजिए। सबको भोजन। सबको काम, चलिए आप १ साल, ८ महीने में आप कीजिए। नहीं तो थोड़ा मौका दे दो। फरिश्तो को देवताओं को और जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश इनको प्रसन्न कर लूं। ऐसी बहुमूल्य वस्तुएँ जमीन से निकाल कर तुमको दे दी जांय।

कोई भी गरीबी दूर नहीं कर सकता

इसलिए मैंने कोई बुरी बात नहीं की। आप कोइ भी आओ। यह कहो कि मैं सट्टा में लिखता हूं चलिए सुप्रीम कोर्ट में आप और मैं आप को बनाता हूं और आप गरीबी दूर कर दीजिए चलिए आप कोई हर्जा नहीं। लेकिन अगर नहीं तो थोड़ा मौका बाबा जी की प्रार्थना पर ताकि मैं देवताओं को प्रसन्न कर लूं। आप की खुशहाली के लिए कुछ काम कर लूं। और आप उसको भी करने नहीं देते। उनको भी नहीं करने देते है। देवताओं को प्रसन्न भी नहीं जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी आकाश उनको भी नहीं मनाने देते तो ये साकेत महायज्ञ यमुना जी गंगा जी के किनारे भी नहीं करने देंगे तो आखिर क्या होगा। तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

मैंने कुछ बुरा तो नहीं कहा

मैंने कुछ नहीं कहा मैंने गलत बात तो नहीं की अरे मैंने कुछ बुरा तो नहीं कहा। अरे मैंने कुछ बुरा तो नहीं कहा।

जनता ने कहा-नहीं।

तो ऐसा जोर से बोलो कि भगवान के दरवाजे तक आवाज जाए। मैंने तो बुरा कोई नहीं कहा। जनता ने जोर से कहा कि नहीं।

यही बात तो मैं जानना चाहता हूँ। और कुछ नहीं।

कोई सामूहिक तकलीफ हो तो हमसे कहो

देखो अगर कोई सामूहिक तकलीफ है।

Scanned with CamScanner

कोई खास बड़ी तकलीफ हो रही। इतना बड़ा अत्याचार हो रहा कि हिन्दू, मुसलमान, इसाई सब काटे जा रहे। आप मुझको बताइये। मैं आज रात को बैठकर के दरखास्त लिखूँ। भगवान, खुदा के दरबार में दूं। देखूँ कैसे आपकी दरखास्त मंजूर नहीं होती है।

मत सताओ इन गरीबों को ये रो देंगे॥

जब सुनेगा इनका मालिक तो जड़ों से खो देगा।

मेरी दरखास्त भगवान के दरबार में जायेगी

आप मुझको बताइये कि ये तकलीफ, ये अत्याचार हिन्दुओं को काटा जा रहा। मुसलमानों को काटा जा रहा। इसाइयों को काटा जा रहा। आप मुझे बताइये। मैं दरखास्त दूं भगवान के दरबार में। दिल्ली को लखनऊ को छोड़िये आप। मैं उधर दूंगा उस दरबार में। देखूँ कैसे नहीं दरखास्त मन्जूर होती है। ये मुझे पूरा विश्वास है कि रिजेक्ट नहीं होगी। मामंजूर नहीं होगी। वह फौरन मंजूर कर देगा और फौरन इन्तजाम करेगा।

अब आप ये बताइये कि ११ महीने के अन्दर दिल्ली वालों ने आप पर अत्याचार किया है।

जनता ने कहा-नहीं।

तो जोर से आवाज लगाइये खुदा के द्वार तक पहुँचाइये। दिल्ली वालों ने ११ महीने के अन्दर। कोई अत्याचार किया है।

जनता ने कहा-नहीं।

मैं आज लिखूंगा और कहूँगा देखिए आप। अपने क्षेत्र में आवाज सुन लीजिए लोग लगा रहे हैं। और दरखास्त दूंगा। जो भी आप कहेंगे सब दरखास्त दूँगा।

सभी महापुरुष दुनियां वालों से सताये गये

बाबा जी की बात बिल्कुल सीधी साधी है। हम भी दुनिया में रहते हैं, क्षमा करना, हमने कोई अपराध नहीं किया है। लेकिन आपको तो उन्होंने बता दिया है जो आपके पहले खड़े हुए थे माननीय। उन्होंने कहा बाबा जी को जेल में बन्द किया था। तो हमको क्या है राम के मां बाप को भी बन्द किया था। कृष्ण का जन्म जेल में हुआ। राम को ये भोगना पड़ा कि बनवास दे दिया। जंगलों जंगलों में पत्थरों पर मारे फिरे। उसके बाद रावण ले गया वहां पाताल लोक में बड़ी मुश्किल से वहाँ से ले आये गये। वह भी जेलखाना था।

मीरा को जहर दे दिया। और बादशाहों ने ईशा मसीह को सूली पर चढ़ा दिया। मुहम्मद को हक ईमान की लड़ाई के लिए दरबदर ठोकर खानी पड़ी वहां पानी नहीं मिला। वहां उनको खाना नहीं मिला। वे कितने मुरीद बिचारे मर गये।

बाबा जी ने आपके लिए तकलीफ उठाई

बड़ ध्यान स। अरे, बाबा जी ने तो तकलीफ आपके लिए उठाई। चलो कोई बात नहीं है। २१ महीने रहे कोई हरजा नहीं। नहीं अगर २१ महीने अन्दर जाते तो तुम्हारी हड्डी-हड्डी काट दी जाती और कोई भी सुनने वाला नहीं होता।

मैंने पहले ही कहा था की नस काटी जायेगी

जब इस मैदान में पहले कहा था कि तुम्हारी नस-नस काटी जायेगी। और तुम्हारा कचूमर निकल जायेगा। अन्त में तुम्हारी हड्डी-हड्डी काटी जायेगी। तब तो तुम बाबा जी कि बात को मानते नहीं थे। तब मजाक समझते थे। और जब घटना हुई तो बाबा जी ने कहा था तुम्हारे पापो का घड़ा भर गया। तुमको सबको भोगना पड़ेगा। लेकिन जिस समय पर अन्दर गये फिर खुदा से मिन्नत की। भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवन, ये खुदा, अब मेहरबानी करो अब दया करो। ये इन्सान आदमी आप के हैं। रूहों को जीवात्माओं को

एक मौका दे दो और मैं तब तक एक आवाज पहुंचा दूँ। उन्होंने मौका दे दिया। एक समय दे दिया। अब बाबा जी की जो बात हो रही बड़े ध्यान से उसको सुनो।

कोई भी मेरे मंच पर आकर अच्छी बात सुना सकता है

हम कोई ऐसी बात नहीं करेंगे हम किसी के विरोधी नहीं। किसी के नहीं। हमारे मंच पर कोई आ जाओ। वहां देखिये अभी ८-९-१० को (वाराणसी में) हुआ। वहां पर जितनी संस्थाओं के लोग सब के सब मंच पर पहुंचे। चाहे पुरानी कांग्रेस चाहे नई कांग्रेस। चाहे ये काग्रेस चाहे वह काग्रस। मंच पर पहुँचे और दो बात अपनी सुनायी। मैंने यह कहा होता कि नहीं आप उतर जाओ। नहीं। आप जनता के हैं, आप कांग्रेस के हैं। आप इसके हैं। आप मंच से उतर जाइये। हमने किसी को मना नहीं किया। मंच पर बैठे तो जो बातें कहनी थी लाउडीस्पीकर से सुनायी।

मैं किसी का एतराज नहीं करता

फिर किसी को इतराज हो तो हमसे बताये। आप ये कहें कि उन्होंने आ करके कुछ कह दिया तो जिसकी तमन्ना हो, जिसकी अच्छी बातें हो। सभी कर सकते हैं। सबका हक है सबका अधिकार है कि जनता को अपनी अच्छी बातों को सुना दे। आप भी सुनायें हम भी सुनायें। और आप भी मानें हम भी मानें। और बुरी चीजें आप भी फेंक दें हम भी फेंक दें।

मुझे बुखार चढ़ा था। मैंने एक चावल हांड़ी का देख लिया और आप ने कहा नहीं। अब ये बताइये कि इमरजेंसी लगा दी जांय। जोर से बोलिए।

जनता ने कहा नहीं।

इमरजेंसी लगा दी जांय? जनता ने कहा नहीं।

इमरजेन्सी न लगाई जाय

अरे तो आप ये क्या नहीं कहते हो कि लगा दी जांय। ये क्यों नहीं कहते मैं तो ये नहीं कहता हूं कि आप कहिए कि नहीं लगाई जाय। आपने ये क्यँ नहीं कहा की लगा दी जाय। क्या बात हुई? क्या इमरजेंसी कोई थी। अब आप को मालूम हुआ तब कहते हो कि नहीं लगाई जायं अरे तभी तो आप कहते हो कि अरे आप को कोई इमरजेंसी में कष्ट हुआ हो। नहीं तो अगर मैं कहता कि इमरजेंसी लगा दी जाय तो आप ये समझते कि सोना गिरेगा, चांदी गिरेगा तभी आप कहते की इमरजेंसी लगा दी जाय। लेकिन इमरजेंसी का आपको कोई अनुभव हुआ है तो आपने कहा नहीं लगा दी जाय। अच्छा यह बताइये कि इमरजेंसी लगाने वालों को लाया जायँ।

जनता ने कहा-नहीं। ठहरिये।

आप रात में हिसाब जोड़ियेगा

१० करोड़ आदमी ३१ मार्च सन् ८० तक तैयार हो जायेंगे और एक घर में चार बच्चे। उसका हिसाब जोड़ियेगा आप जा करके घर में। कितना होगा बच्चों को जोड़ लीजिएगा और घर में १० करोड़ आदमी ये। कितने करोड़ हो जायेंगे रात को सोचियेगा।

दस करोड आदमी क्या करेंगे यह अभी नहीं बताऊँगा

और बाबा जी इन सब गरीबों को जो देहात में खेती करते हैं उनको एक आदेश देंगे। क्या देंगे ये बताऊँगा नहीं। ये आज बताने वाला अबकी गलती नहीं करूंगा। एक दफे की गलती करने से सबने मुसीबत उठायी। और मुझे भी २१ महीने जेल में रहना पड़ा। अबकी गलती नहीं होगी। अबकी तो हमने उनसे सब पूछ लिया। अबकी गलती नहीं। लेकिन १० करोड़ आदमियों को कहा जायेगा कि ये प्रचार करो। या ये काम करो। तो रात को सोचियेगा कि हिंदुस्तान में एक आदमी का जब १० करोड़

आदमी प्रचार करने निकलेंगे तो उसका असर क्या होगा ये रात को आप सोचिएगा। अपने बुद्धि, अक्ल से।

तो मैं इतनी बात आपको याद दिलाना चाहता हूँ और कोई बात नहीं।

इसलिए आप इन्सान, बुद्धि वाले और अक्ल वाले मनुष्य और फिर सुख के साधन जुटाओ।

महात्मा की बात सबके कल्याण की होती है

और फिर महात्माओं की बात सदा तुम्हारे हित कल्याण और फायदे की होती है। कोई फकीर, महात्मा भारत में आया उसने कभी किसी का नुकसान नहीं चाहा। बाबा जी आदमी हैं। न हिन्दुओं का नुकसान न मुसलमानों का नुकसान। न इसाईयों का नुकसान किसी का नुकसान नहीं चाहते। वह सबसे प्यार करते हैं और सबके लाभ का काम करते हैं।

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पूज्य स्वामी जी महाराज फरवरी में २०–२२ ता० तक मथुरा आ गये। तब से आश्रम में बहुत से कामों को निवटाते रहे और आपात काल में सरकार द्वारा हड़प ली गई जमीन के वापसी के लिए बात चीत हुई। फिर १४ मार्च से सतसंग का कार्यक्रम आरम्भ किये। १४ बयाना भरतपुर १५ होडल हरयाना १७ दिल्ली १८ मितली मेरठ २० गाजियाबाद। २३ से २५ मार्च होली का सतसंग जयपुर।

२८ घिरोर, मैनपुरी २९ चौराईपुर, तरिहा मैनपुरी ३० परवा, बेला इटावा अप्रेल में १ सरम हरदोई २ जहानी खेड़ा हरदोई ३ लखनऊ ४ रायबरेली, ५ पट्टी प्रतापगढ। ६ से ११ अप्रेल वाराणसी में गंगा की रेती पर विशेष सतसंग और भूमि पूजन। १५ ओबरा मिर्जापुर १६ वाराणसी १७ जौनपुर १८ आजमगढ़ १९ इसतर फैजाबाद, २० करौंदी, कमालपुर २१ से २५ अप्रेल आजमगढ़ बूढ़नपुर, टहर वाजिदपुर, तहबरपुर, परशुरामपुर, फूलपुर, नगायमीर, जहानागंज, शहर आजमगढ़ आमि

२६ अप्रेल बिजेथुआ, (कादीपुर) सुलतानपुर। २७ से २९ अप्रेल इलाहाबाद के घेरुई, हांडिया भरवारी, सिराथू और करछना में। ३० अप्रेल चुड़ियानी फतेहपुर १ मई जहानाबाद कानपुर २ मई रूरा कानपुर ३ और ४ मई इटावा के विभिन्न क्षेत्रों में।

जयगुरुदेव

सतयुग आयेगा—३३ करोड़ देवताओं का देश बिदेश में कार्य प्रारम्भ

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय) काशी की गंगा रेती पर

दिनांक १५ फरवरी ७९ से प्रारम्भ होकर २५-२-७९ शिवरात्रि की पूर्णाहुति

दो करोड़ नर-नारियों का जमाव बम भोले बाबा विश्वनाथ को हार्दिक प्रसन्न

इस अवसर पर बमभोले का डमरू बजेगा और वहां ऐसा ताण्डव नृत्य करगे कि नर-नारियों के सारे कलियुग, दुराचारी व्यभिचारी स्वभाव झड़ जायेंगे। सभी में सत्य, सतयुगी विचारों वाले रहन सहन, स्वभाव उतर आयेंगे बाबा जी की एक भी बात न झूठ हुई, न होगी सतयुग बहुमूल्य पदार्थ एवं धन धान्य लेकर उतरेगा। उसे लेने के लिये अपने विचारों एवं रहन सहन में परिवर्तन कीजिए बाबा जी की चेतावनी।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ़ कर सतसंग कीजिये जीवन को सात्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २१, अंक १ मई १९७८

रजिस्टर्ड एल-4
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१–साधक चिन्तन निरूपण	६० पैसे
२–याद रक्खो गुरु के वचन	४० पैसे
३–प्रति दिन के विचार	६० पैसे
४–परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५–सन्तमत में सभा निर्माण	६० पैसे
६–तुलसी वाणी	६० पैसे
७–यम लोकमार्ग	५० पैसे
८–ज्ञान रश्मि	७५ पैसे
९–हम गुरु को कितना मानते हैं	७५ पैसे
१०–उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द	५ रु०

—: पद्य में :—

११–प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रू० डाक खर्च कम से कम २) । पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें । वी० पी० भेजने का नियम नहीं है ।

१२–स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें ।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या ....

श्री ....

पता

जो ऐसी पाठक मई माह से ग्राहक बने हैं उनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है । अगर उन्होंने चन्दा न भेजा हो तो १०) वार्षिक चन्दा शीघ्र भेज दें ।

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर मथुरा एवं मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित